व्याकरण शाखी

हिंदी व्याकरण

10 कोर्स 'A'

उत्तरमाला

डॉ॰ प्रीति 'सागर'
एम॰ए॰, पीएच॰डी॰

Harbour Press®
INTERNATIONAL

1. अपठित-गद्यांश

16. (क) i	(ख) ii	(ग) iv	(घ) ii	(ङ) i
17. (क) ii	(ख) iii	(ग) iii	(घ) i	(ङ) ii
18. (क) ii	(ख) iii	(ग) ii	(घ) ii	(ङ) ii
19. (क) ii	(ख) i	(ग) ii	(घ) iv	(ङ) iv
20. (क) ii	(ख) iii	(ग) iii	(घ) iv	(ङ) iii
21. (क) ii	(ख) i	(ग) iii	(घ) iv	(ङ) iii
22. (क) iii	(ख) iv	(ग) iii	(घ) iv	(ङ) iii
23. (क) i	(ख) iii	(ग) ii	(घ) ii	(ङ) iii
24. (क) ii	(ख) iii	(ग) ii	(घ) ii	(ङ) iv
25. (क) iii	(ख) iv	(ग) ii	(घ) iv	(ङ) ii
26. (क) ii	(ख) iii	(ग) iii	(घ) i	(ङ) ii
27. (क) ii	(ख) ii	(ग) ii	(घ) ii	(ङ) i
28. (क) iv	(ख) ii	(ग) iv	(घ) iv	(ङ) iii
29. (क) iv	(ख) i	(ग) iii	(घ) i	(ङ) ii
30. (क) iii	(ख) i	(ग) ii	(घ) i	(ङ) iv
31. (क) iv	(ख) iv	(ग) ii	(घ) iii	(ङ) ii
32. (क) ii	(ख) ii	(ग) ii	(घ) i	(ङ) iii
33. (क) iii	(ख) iv	(ग) iii	(घ) iv	(ङ) ii
34. (क) ii	(ख) iv	(ग) iv	(घ) i	(ङ) ii
35. (क) iv	(ख) iv	(ग) i	(घ) iv	(ङ) iii

2. अपठित-काव्यांश

12. (क) iii	(ख) i	(ग) ii	(घ) iv	(ङ) iii
13. (क) ii	(ख) i	(ग) iii	(घ) ii	(ङ) i
14. (क) iii	(ख)	(ग) iv	(घ) iv	(ङ) iii
15. (क) i	(ख)	(ग) i	(घ) iv	(ङ) iii
16. (क) ii	(ख) ii	(ग) iii	(घ) iii	(ङ) i

खंड-ख : व्यावहारिक व्याकरण

रचना के आधार पर वाक्य-भेद

1. (क) संयुक्त वाक्य (ख) सरल वाक्य (ग) मिश्र वाक्य (घ) सरल वाक्य (ङ) संयुक्त वाक्य
(च) संयुक्त वाक्य (छ) संयुक्त वाक्य (ज) सरल वाक्य (झ) सरल वाक्य (ञ) सरल वाक्य
(ट) संयुक्त वाक्य (ठ) संयुक्त वाक्य (ड) संयुक्त वाक्य (ढ) सरल वाक्य (ण) संयुक्त वाक्य
(त) संयुक्त वाक्य (थ) संयुक्त वाक्य (द) संयुक्त वाक्य

2.

	आश्रित वाक्य	**भेद**
(क)	जहाँ मैं रहता हूँ,	क्रियाविशेषण उपवाक्य
(ख)	तुम्हें अपना दीपक स्वयं बनना है।	संज्ञा उपवाक्य
(ग)	मैं आज विद्यालय नहीं जाऊँगा।	संज्ञा उपवाक्य
(घ)	मैं आज नहीं चल पाऊँगा।	संज्ञा उपवाक्य
(ङ)	मैं कल अहमदाबाद जा रहा हूँ।	संज्ञा उपवाक्य
(च)	जो कल आया था	विशेषण उपवाक्य
(छ)	जब पानी बरसने लगा,	क्रियाविशेषण उपवाक्य
(ज)	जहाँ-जहाँ धुआँ है,	क्रियाविशेषण उपवाक्य
(झ)	जो अध्यापक विज्ञान पढ़ाते हैं,	विशेषण उपवाक्य
(ञ)	जब मैं वहाँ गया,	क्रियाविशेषण उपवाक्य
(ट)	जैसा करोगे	क्रियाविशेषण उपवाक्य
(ठ)	मैं पायलट बनूँ।	संज्ञा उपवाक्य
(ड)	मैं क्या चाहता हूँ।	संज्ञा उपवाक्य
(ढ)	आप अवश्य आओगे।	संज्ञा उपवाक्य
(ण)	वह बीमार है।	क्रियाविशेषण उपवाक्य
(त)	जहाँ से आए थे।	क्रियाविशेषण उपवाक्य
(थ)	जो कल यहाँ आया था।	विशेषण उपवाक्य
(द)	ज्यों ही वह आया,	क्रियाविशेषण उपवाक्य
(ध)	यदि तुम परिश्रम करते	क्रियाविशेषण उपवाक्य
(न)	पृथ्वी गोल है	संज्ञा उपवाक्य
(प)	वह कहीं बीमार न पड़ जाए।	संज्ञा उपवाक्य
(फ)	यदि तुम आते	संज्ञा उपवाक्य
(ब)	जो आपने मुझे दिए थे।	विशेषण उपवाक्य
(भ)	उन्हें तुरंत बाज़ार जाना है।	संज्ञा उपवाक्य
(म)	जल्दी चलो	क्रियाविशेषण

(य) जो कक्षा में प्रथम आया था। विशेषण उपवाक्य

(र) जो काली कमीज़ पहने हुए है। विशेषण उपवाक्य

(ल) वह बहुत बीमार है। संज्ञा उपवाक्य

(व) जिसकी आँखें नीली हैं। विशेषण उपवाक्य

3. (क) परिश्रमी विद्यार्थी अवश्य प्रथम आएगा।

(ख) मेरे पास चाबी से चलने वाला एक खिलौना है।

(ग) उसके आने पर तुम छिप जाना।

(घ) मेरे समझाने पर वह मान गया।

(ङ) मेरा एक दोस्त विदेश में रहता है।

(च) मुझे पढ़ी-लिखी पत्नी चाहिए।

(छ) परीक्षाएँ समाप्त होते ही हम कानपुर चले गए।

(ज) परिश्रमी राधा कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करती है।

(झ) बीमार होने के कारण वह तुम्हारे घर नहीं आ सकता।

4. (क) वह विद्वान है। संज्ञा उपवाक्य

(ख) मैं कल कोलकाता जा रहा हूँ। संज्ञा उपवाक्य

(ग) जिसने मुझे कल गिरने से बचाया। विशेषण उपवाक्य

(घ) उसका जीवन व्यर्थ है। प्रधान उपवाक्य

(ङ) उसकी जीत होती है। प्रधान उपवाक्य

(च) आप आवश्य आएँगे। संज्ञा उपवाक्य

5. (क) छात्रों ने पुस्तकें उठाईं और घर चले गए।

(ख) बच्चा साइकिल से टकराकर गिर गया इसलिए रो रहा था।

(ग) पाँच बजते हैं और कर्मचारी चले जाते हैं।

(घ) गीता थोड़ा-सा ठहरी और तेज़ी से चली गई।

(ङ) उसने अध्ययन किया और परीक्षा में सफल रहा।

(च) वह बाज़ार गया और दो जोड़ी जूते खरीद लाया।

(छ) वह पढ़ता है और नौकरी भी करता है।

(ज) तेज़ वर्षा हो रही थी, इसलिए वह घर पर ही बैठा रहा।

(झ) उसे धन का अभिमान है, इसलिए अकड़कर चलता है।

(ञ) सूरज उगा और अंधकार दूर हो गया।

6. (क) क्योंकि वह परिश्रमी था इसलिए सफल हुआ।

(ख) जब रंभा ने कहानी सुनाई तब उर्वशी रो पड़ी।

(ग) ज्योंही बादल घिरे त्योंही वर्षा होने लगी।

7. (क) सरल वाक्य – शेर दिखाई देते ही सब लोग डर गए।

संयुक्त वाक्य – शेर दिखाई दिया और सब लोग डर गए।

(ख) सरल वाक्य – रमन ने खेत में चर रहीं गायें निकाल दिया।
संयुक्त वाक्य – रमन के खेत में गायें चर रही थीं इसलिए उसने उन्हें निकाल दिया।
(ग) सरल वाक्य – कपिलदेव के पहले ओवर की पहली गेंद फेंकने पर मोहसिन खान आउट हो गया।
संयुक्त वाक्य – कपिलदेव ने पहले ओवर की पहली गेंद फेंकी और मोहसिन खान आउट हो गया।
(घ) सरल वाक्य – गली में शोर होने पर सब लोग बाहर आ गए।
संयुक्त वाक्य – गली में शोर हुआ और सब लोग बाहर आ गए।
(ङ) सरल वाक्य – बादलों के गरजने के साथ ही तेज़ वर्षा होने लगी।
संयुक्त वाक्य – बादल गरज रहे थे और तेज़ वर्षा होने लगी।
(च) सरल वाक्य – कारगिल में पाकिस्तान के घुसपैठ करने पर भारत ने उसे करारी मात दी।
संयुक्त वाक्य – पाकिस्तान ने कारगिल में घुसपैठ की और भारत ने उसे करारी मात दी।
(छ) सरल वाक्य – वह लड़का गाँव जाकर बीमार हो गया।
संयुक्त वाक्य – वह लड़का गाँव गया और वहाँ बीमार हो गया।
(ज) सरल वाक्य – शेर दिखाई देते ही सब बच्चे डरकर भाग गए।
संयुक्त वाक्य – शेर दिखाई दिया और बच्चे डरकर भाग गए।
(झ) सरल वाक्य – सैनिक टुकड़ी ने लालकिले की प्राचीर पर आए प्रधानमंत्री को सलामी दी।
संयुक्त वाक्य – प्रधानमंत्री लालकिले की प्राचीर पर आए और सैनिक टुकड़ी ने सलामी दी।
(ञ) सरल वाक्य – सभा में प्रधानाचार्य के आते ही सब विद्यार्थी खड़े हो गए।
संयुक्त वाक्य – सभा में प्रधानाचार्य आए और सब विद्यार्थी खड़े हो गए।
(ट) सरल वाक्य – दुकान में ताला तोड़ते हुए चोर को पुलिस ने रँगे हाथ पकड़ लिया।
संयुक्त वाक्य – चोर दुकान का ताला तोड़ रहा था इसलिए पुलिस ने उसे रँगे हाथ पकड़ लिया।
(ठ) सरल वाक्य – मोहन भाई के साथ बाज़ार जाकर फल खरीदा।
संयुक्त वाक्य – मोहन भाई के साथ बाज़ार गया और फल खरीदा।
(ड) सरल वाक्य – अध्यापक कक्षा में आकर पढ़ाने लगे।
संयुक्त वाक्य – अध्यापक कक्षा में आए और पढ़ाने लगे।

8. (क) सभी विद्यार्थी कवि सम्मेलन में इसलिए शांत बैठे रहे क्योंकि वे समय से पहुँच गए थे।
(ख) नमक-कर उन्हें एक सामान्य-सा मुद्दा लगता था।
(ग) एक मोटरकार आई और उनकी दुकान के सामने रुक गई।
(घ) इस नहर को उन लोगों ने बनाया था जिन्हें अनपढ़ और गुमनाम मान लिया गया है।
(ङ) बादल आकर चले गए।
(च) बाग में मोहन ने सोहन को देखा और वह आश्चर्यचकित हो गया।
(छ) दस बजते ही जब दरवाज़े की घंटी बजी तभी अतिथि आ गए।
(ज) आज़ादी के लिए स्त्री और पुरुष मिले और लंबा संघर्ष किया।
(झ) इन लोगों की छत्रछाया हटते ही मुझे अपने वजूद का अहसास हुआ।
(ञ) बालक रोता रहा और चुप हो गया।
(ट) वह क्रिकेट का एक अच्छा खिलाड़ी था जिससे मेरी भेंट हुई।

(ठ) गोपीनाथ ने खाना खाया और सो गया।

(ड) सेनानी न होने पर भी लोग उसे कैप्टन कहते थे।

(ढ) जगदीश के पास पुस्तक नहीं है इसलिए वह मेरी पुस्तक ले गया है।

(ण) कक्षा में शिक्षक के आते ही बच्चे चुप हो गए।

(त) उसने तताँरा को देखा और फूट-फूटकर रोने लगी।

(थ) वर्षा रुकते ही वह आ गया।

(द) जैसे ही घंटी बजी वैसे ही चोर भाग गए।

(ध) वह युवक जिसने गिलास तोड़ा था, बाहर खड़ा हो गया।

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नोत्तर

1. (क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाक्य (ग) संयुक्त वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य (ङ) सरल वाक्य

(च) सरल वाक्य (छ) मिश्र वाक्य (ज) संयुक्त वाक्य (झ) मिश्र वाक्य (ञ) संयुक्त वाक्य

(ट) संयुक्त वाक्य (ठ) संयुक्त वाक्य (ड) सरल वाक्य (ढ) मिश्र वाक्य (ण) संयुक्त वाक्य

(त) सरल वाक्य (थ) सरल वाक्य (द) मिश्र वाक्य (ध) संयुक्त वाक्य (न) संयुक्त वाक्य

2. (क) जो परिश्रम करते हैं

(ख) विद्यालय में चहल पहल है

(ग) जो सामने खड़ा है

(घ) चुनाव में कौन जीता

(ङ) यह काम करना उसके लिए कठिन है

3. (क) जब संध्या आती है तो समुद्र विकल होकर उछलता है।

(ख) जैस ही महामंत्री का आगमन हुआ, कार्यक्रम का आरंभ हो गया।

(ग) जो व्यक्ति मेहनत करता है वह कभी असफल नहीं होता।

(घ) यदि अवकाश पर रहना है तो प्रार्थना पत्र लिखो।

(ङ) जैसे ही सर्वदयाल ने शीत से बचने के लिए जेब में हाथ डाला वैसे ही कागज़ का एक टुकड़ा निकल आया।

(च) जब मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था तब सारा समय पतंगबाजी की भेंट होता था।

(छ) जिसने सफ़ेद कमीज पहन रखी है उस छात्र को यह पुस्तक दे दो।

(ज) जो संतोषी होता है वह व्यक्ति सदा सुखी रहता है।

(झ) मैंने एक बच्चे को देखा जो स्कूटर चला रहा था।

(ञ) जो सच बोलने वाला व्यक्ति होता है, उसे कोई नहीं डरा सकता।

(ट) जब तक शिक्षक रहते हैं, बच्चे शांत रहते हैं।

(ठ) तुम उस स्थान पर चले जाओ जहाँ गाड़ी रुकती है।

(ड) जैसे ही विद्यार्थी कवि सम्मेलन में समय से पहुँचे वैसे ही शांति से बैठ गए।

(ढ) जैसे ही अजय विद्यालय से घर पहुँचा वैसे ही खेलने चला गया।

(ण) वह बाज़ार गई क्योंकि उसे राशन लेना था।

(त) जैसे ही प्रश्न हल हो गए, वैसे ही छात्रों ने काम बंद कर दिया।

(थ) कहाँ चला गया वह भीख माँगने वाला।

(द) कहाँ गई, अमरूद बेचने वाली वह औरत।

4. (क) सूर्य आसमान से धीरे-धीरे उतरा और समुद्र में डूब गया।

(ख) विद्यालय का समारोह समाप्त हुआ और सब घर चले गए।

(ग) सुषमा स्कूल नहीं गई क्योंकि वह बीमार है।

(घ) रमेश भूखा है इसलिए खिचड़ी खा रहा है।

(ङ) वह दिल्ली गया तो उसे नौकरी का पत्र मिला।

(च) विद्यार्थी अपनी आँखें गवाँ बैठा क्योंकि रोशनी कम थी।

(छ) अध्यापक ने डाँटा इसलिए बालक रूठ गया।

(ज) बादल गरजे और चले गए।

(झ) एक मोटरकार आई और उनकी दुकान के सामने रूकी।

(ञ) मैं ढीठ बना और उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा।

(ट) वह अपने भाई साहब से मिलने आए है परंतु मैं उन्हें नहीं जानता।

(ठ) रीतिका घर पहुँची तो माता जी जा चुकी थी।

(ड) मैंने उसे पढ़ाया और नौकरी दिलवाया।

(ढ) माता जी घर पहुँची और मैं भी आ गई।

5. (क) कम आय वालों को मितव्ययी होना चाहिए।

(ख) पिता जी थैला उठाकर बाज़ार चले गए।

(ग) अच्छा आदमी होने के कारण जगत को सभी प्यार करते हैं।

(घ) सेनानी नहीं होने पर भी लोग उसे कैप्टन कहते हैं।

(ङ) टोपी वाला बाबू कहाँ गया?

(च) परिश्रमी सुरेश कक्षा में प्रथम आया।

(छ) ठाकुर साहब मेंबर बन जाएँगे उन्हें पूरा विश्वास था।

(ज) देश के हितैषी को वोट दें।

(झ) वह बिना बताए आकर लौट गया।

(ञ) भारत के सामने बढ़ती जनसंख्या मुख्य समस्या है।

(ट) तुम्हारे कहते सब लोग मान गए।

6. **उद्देश्य**—लालची लोग

विधेय—दिन-रात ठाकुर साहब के घर मिठाइयाँ उड़ाते थे।

7. ठाकुर साहब मेंबर बन जाएँगे—संज्ञा उपवाक्य

8. (क) अब बुढ़ापा आ गया—संज्ञा आश्रित उपवाक्य

(ख) जब मॉरीशस की स्वच्छता देखी तब मन प्रसन्न हो गया।

(ग) गुरुदेव आराम कुर्सी पर लेटकर प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले रहे थे।

9. (क) मैंने उस व्यक्ति को देखा था और वह पीड़ा से कराह रहा था।

(ख) परिश्रमी व्यक्ति अवश्य सफल होता है।

(ग) संज्ञा उपवाक्य

(घ) जहाँ कश्मीरी गेट का निकल्सन कब्रगाह है वहाँ उनका ताबूत उतारा गया।

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

1.	(क) ii	(ख) i	(ग) iii	(घ) ii		
2.	(क) ii	(ख) iii	(ग) iii	(घ) ii	(ङ) i	
	(च) iii	(छ) i	(ज) ii	(झ) iii	(ञ) ii	
3.	(क) i	(ख) iii	(ग) i	(घ) i	(ङ) ii	(च) iii
4.	(क) i	(ख) iii	(ग) iii	(घ) ii	(ङ) ii	

वाच्य

1. वाक्य में क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का प्रयोग कर्ता के अनुसार या कर्म के अनुसार या वाक्य के भाव के अनुसार है, उसे 'वाच्य' कहते हैं।
2. हिंदी में वाच्य निम्नलिखित तीन प्रकार के होते हैं–
   (i) कर्तृवाच्य – जैसे– सुमन पत्र लिखती है।
   कुत्ता ज़ोर से भौंकता है।
   (ii) कर्मवाच्य – जैसे– माँ के द्वारा खाना पकाया जाता है।
   कविता से अंग्रेज़ी नहीं पढ़ी जाती।
   (iii) भाववाच्य – जैसे– घायल चोर से भागा न गया।
   ऐसी धूप में मुझसे चला नहीं जाता।
3. (क) कर्तृवाच्य (ख) भाववाच्य (ग) कर्मवाच्य
   (घ) कर्मवाच्य (ङ) कर्तृवाच्य (च) भाववाच्य
   (छ) कर्मवाच्य (ज) कर्मवाच्य (झ) भाववाच्य
   (ञ) कर्तृवाच्य (ट) कर्मवाच्य (ठ) कर्मवाच्य
   (ड) कर्मवाच्य (ढ) कर्मवाच्य (ण) कर्तृवाच्य
   (त) भाववाच्य (थ) कर्मवाच्य (द) कर्मवाच्य
4. (क) बच्चे फूलदान में पौधे लगाएँगे।
   (ख) युवराज आज अच्छी बॉल फेंक रहा है।
   (ग) फूलवालों की सैर को हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतीक बनाया।
   (घ) कल आप दावत देंगे।
   (ङ) चपरासी ने सही समय पर घंटी बजाई।
   (च) वह पत्र लिखता है।
   (छ) धोबिन कपड़े धोती है।
   (ज) वह पत्र चाचा जी ने लिखा था।
   (झ) शिकारी शिकार करते हैं।
5. (क) तुम्हारे द्वारा फूल तोड़ा जाएगा।
   (ख) बच्चों ने टी०वी० की वजह से किताबें छूना छोड़ दिया है।
   (ग) चोरों द्वारा चोरी की जाती है।
   (घ) तुषार द्वारा स्वादिष्ट भोजन किया जाएगा।
   (ङ) जंगल में जाकर लक्ष्मण द्वारा फल तोड़े गए।

(च) यह चित्र मेरे द्वारा बनाया गया है।

(छ) नानी के द्वारा कहानी सुनाई गई।

(ज) एडिसन द्वारा बल्ब बनाया गया।

(झ) अध्यापिका द्वारा छात्र को गणित पढ़ाया गया।

(ञ) संतोष द्वारा अखबार नहीं पढ़ा जाता।

(ट) मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

(ठ) मेरे द्वारा खाना खाया गया।

(ड) मिताली द्वारा सिनेमा नहीं देखा जाता।

6. (क) शीना से दौड़ा नहीं जाता।

(ख) उन लोगों से शांत नहीं रहा जाता।

(ग) मुझसे इस गर्मी में सोया नहीं जाता।

(घ) मुझसे इतना खाना खाकर चला नहीं जाता।

(ङ) तुमसे इतनी पहाड़ियाँ कैसे चढ़ी जाएँगी?

(च) पक्षियों द्वारा रात को सोया जाता है।

(छ) मोनू से चला नहीं जाता।

(ज) दर्द के कारण उससे खड़ा ही नहीं हुआ जाता।

(झ) बच्चों द्वारा मैदान में खेला जाता है।

7. (क) मैं वहाँ नहीं जा सकता।

(ख) उससे ज़ोर से नहीं बोला जाता।

(ग) मेरे द्वारा ही यह पुस्तक लिखी गई है।

(घ) दर्द के मारे रोगी से सोया नहीं गया।

(ङ) मैं इतने कम प्रकाश में पत्र नहीं पढ़ सकता।

(च) यह पुस्तक किसके द्वारा लिखी गई है?

(छ) छत पर कैसे जाया जाएगा?

(ज) राहुल द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

(झ) ईशानी से सोया नहीं जाता।

(ञ) पक्षी आकाश में उड़ते हैं।

(ट) बच्चे से चला नहीं जाता।

(ठ) सचिन द्वारा पुरस्कार प्राप्त किया जाता है।

(ड) छात्र ने कार्यक्रम में गीत सुनाए।

(ढ) बच्चे द्वारा हँसा जा रहा है।

(ण) संजय द्वारा कविता नहीं सुनाई जाती।

(त) योगेश दौड़ नहीं सकता।

(थ) मुझसे अब चला नहीं जाता।

(द) ज्योति के द्वारा अच्छी तरह बाइक नहीं चलाई जाती।

(ध) उर्दू में लिखित पत्र मैं नहीं पढ़ सकता।

(न) जॉनी से चला नहीं जाता।

(प) तानसेन को 'संगीत सम्राट' भी कहा जाता है।

(फ) उन्होंने इस मामले की पूरी जाँच की।

(ब) अब मुझसे चला नहीं जाता।

(भ) मेरे द्वारा दरवाज़ा नहीं खोला जा सकता।

(म) सुनीता विलियम्स ने उद्घाटन किया।

(य) मुझसे सोचा नहीं जाता।

(र) मुझसे इस तरह बैठा नहीं जाता।

(ल) उन लड़कों ने हम सबको मूर्ख बनाया है।

(व) नितिन के द्वारा पतंग नहीं उड़ाई जा रही है।

(श) हम वह दृश्य न देख सके।

(ष) लेखक के द्वारा पुस्तक लिखी जा रही है।

(स) कछुए से दौड़ा नहीं जा सका।

(ह) लड़कियों द्वारा देशप्रेम का एक मार्मिक गीत सुनाया गया।

(क्ष) उनका दुख मैं नहीं देख सकता।

(त्र) बीमारी के कारण उससे उठा नहीं जाता।

(ज्ञ) सुनामी पीड़ितों की मदद के लिए सरकार द्वारा करोड़ों रुपये खर्च किए गए।

(श्र) मेरे द्वारा खाना खाया गया।

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नोत्तर

1. (क) मुझसे खाना खाकर गाया नहीं जाएगा।

(ख) बच्चों के द्वारा मैदान में खेला जाएगा।

(ग) सोहन से चला नहीं जाता है।

(घ) मुझसे इस गर्मी में सोया नहीं जाएगा।

(ङ) उन लोगों से शांत नहीं रहा जाएगा।

2. (क) बच्चों द्वारा टी०वी० की वजह से किताबें छूई नहीं जाती।

(ख) मेरे द्वारा प्रेमचंद का उपन्यास 'गोदान' पढ़ा गया।

(ग) राम के द्वारा स्वादिष्ट भोजन किया जाएगा।

(घ) शिकारी द्वारा शिकार किए जाते हैं।

(ङ) संगीता के द्वारा कल नृत्य का कार्यक्रम देखा गया।

(च) उनके घर से सुरेंद्र द्वारा पुस्तक लाया गया।

(छ) सुरेश के द्वारा गीत गाया जाता है।

(ज) नेताजी द्वारा देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया गया।

(झ) चालाक लोगों द्वारा सदा भले लोगों को धोखा दिया जाता है।

3. (क) चपरासी ने सही समय पर घंटी नहीं बजाई।

(ख) वह पत्र लिखता है।

(ग) वह पत्र पिता जी ने लिखा था।

(घ) शांतिलाल बच्चों को यहाँ लाया।

(ङ) अब मैं जबलपुर नहीं जा पाऊँगा।

(च) पक्षियों ने चुगा।

(छ) प्रार्थना सभा में घोषणा हुई।

(ज) आप सत्य नहीं बोलते।

(झ) राजा ने प्रजा को कष्ट दिया।

4. (क) कर्तृवाच्य (ख) कर्तृवाच्य (ग) कर्मवाच्य (घ) कर्तृवाच्य

(ङ) कर्तृवाच्य (च) भाववाच्य

5. (क) कूजन कुंज में आस-पास के पक्षी द्वारा संगीत का अभ्यास किया जाता है।

(ख) श्यामा सुबह-दोपहर के राग बखूबी गाती है।

(ग) दर्द के कारण उससे चला नहीं जाता।

(घ) श्यामा के गीत की तुलना बुलबुल के सुगम संगीत से करते हैं।

6. (क) मई महीने में कॉलेज वालों द्वारा शीला अग्रवाल को नोटिस थमा दिया गया।

(ख) देशभक्तों की शहादत को आज भी याद करते हैं।

(ग) खबर सुनकर उसके द्वारा चला भी नहीं जा रहा था।

(घ) जिस आदमी ने पहले पहल आग का आविष्कार किया, वह कितना बड़ा आविष्कर्ता है।

7. (क) बालगोबिन भगत द्वारा प्रभातियाँ गाई जाती थीं।

(ख) बीमारी के कारण उससे यहाँ न आया जा सका।

(ग) माँ ने बचपन में ही घोषित कर दिया था।

(घ) अवनि द्वारा चाय बनाई जा रही है।

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

1. (क) i (ख) iii (ग) iii (घ) iii (ङ) i

(च) ii (छ) iii (ज) ii (झ) i (ञ) iii

2. (क) ii (ख) ii (ग) i (घ) ii (ङ) i

(च) i (छ) i (ज) iii (झ) i (ञ) ii

पद-परिचय

1. शब्द वर्णों के सार्थक एवं व्यवस्थित मेल से बनते हैं। ये भाषा की स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई हैं।

   शब्द स्वतंत्र रूप से शब्दकोश में होते हैं; जैसे– कमल, गमला, फूल, किसान, छात्र, विद्यालय, पुस्तक आदि।

   शब्द जब व्याकरण के नियमों में बँधकर वाक्य में प्रयुक्त होते हैं, तब ये 'पद' बन जाते हैं; जैसे– छात्र, कहानी, पढ़ – ये तीनों ही शब्द हैं।

   - छात्र ने कहानी पढ़ी।
   - छात्र कहानी पढ़ता है।

   व्याकरण के नियमानुसार वाक्य में प्रयुक्त होकर 'छात्र', 'कहानी', 'पढ़' पद बन गए हैं क्योंकि अब ये वाक्य का अंग बन गया है।

2. (क) रोया – अकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिग, भूतकाल, कर्तृवाच्य।

   (ख) पढ़ाया – सकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिग, भूतकाल, कर्तृवाच्य।

   (ग) संतान – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक।

   (घ) प्रशंसा – भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, क्रिया के पूरक के रूप में प्रयुक्त।

   (ङ) स्कूल – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, अपादान कारक।

   (च) दरवाज़े – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, अधिकरण कारक।

   (छ) ईंट – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक।

   (ज) अतुल – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक 'आया है' क्रिया का कर्ता।

   (झ) दूध – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, कर्म कारक।

   (ञ) अंतरा – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक 'पढ़ती है' क्रिया का कर्ता।

   (ट) कविता – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक।

   (ठ) पुस्तक – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक।

   (ड) जूस – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, कर्म कारक।

   (ढ) किताब – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, 'यह' विशेषण की विशेष्य के रूप में प्रयुक्त।

   (ण) घर – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, अधिकरण कारक।

   (त) बीमार – गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिग, विशेष्य 'मैं'।

   (थ) व्यायाम – भाववाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, 'करता था' क्रिया के पूरक के रूप में प्रयुक्त।

   (द) घर – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, कर्म कारक।

   (ध) गीता – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, 'गई' क्रिया का कर्ता।

   (न) संसार – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, संबंध कारक।

   (प) गंगा – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक।

   (फ) नृत्यांगना – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक।

(ब) वह – सर्वनाम, अन्य पुरुषवाचक, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक, 'गया' क्रिया का कर्ता।

(भ) दसवीं – निश्चित संख्यावाचक विशेषण, क्रमसूचक, एकवचन, स्त्रीलिंग, अधिकरण कारक।

(म) प्रेमचंद – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक।

(य) भारत – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक।

(र) कवि – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक।

(ल) यह – सर्वनामिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, विशेष्य 'पुस्तक'।

(व) ईमानदारी – भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक।

(श) शिमला – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग।

(ष) कमला – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक 'आई है' क्रिया की कर्ता।

(स) विद्‌यालय – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, अपादान कारक।

(ह) कौन – प्रश्नवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक।

(क्ष) सीता – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक, 'आई' क्रिया की कर्ता।

(त्र) मंत्री – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, कर्म कारक 'थे' के पूरक रूप में।

(ज्ञ) रोहित – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक 'पढ़ता है' का कर्ता।

(श्र) कक्षा – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, अधिकरण कारण।

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नोत्तर

1. (क) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, क्रिया, रीतिवाचक क्रियाविशेषण।

(ख) पुल्लिग, एकवचन, पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, कर्ता कारक, 'कूदना' क्रिया का कर्ता।

(ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, रीतिवाचक क्रियाविशेषण।

(घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग।

(ङ) सकर्मक क्रिया, कर्तृवाचक, पुल्लिग, एकवचन, वर्तमान काल।

(च) व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक, 'है' का कर्ता।

(छ) विशेषण, निश्चित संख्यावाचक, एकवचन, स्त्रीलिंग।

(ज) अविकारी शब्द, विस्मयादिबोधक, हर्षबोधक।

(झ) कालवाचक क्रियाविशेषण, भेजा करो क्रिया से संबंध।

(ञ) स्थानवाचक क्रियाविशेषण, 'नौकरी करता है' क्रिया का स्थान निर्देश।

(ट) रवि व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक।
काला–गुणवाचक विशेषण, पुल्लिग, एकवचन, कोट विशेष्य।

(ठ) रीतिवाचक क्रियाविशेषण 'चलता' है क्रिया से संबद्‌ध, 'चलता है' क्रिया की रीति बताता है।

(ड) संबंधबोधक अव्यय; वह और पेड़ इसके संबंधी शब्द हैं।

(ढ) अपने–विशेषण (सार्वनामिक), एकवचन, पुल्लिग।

(ण) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन।

(त) हम-तुम–पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिग/स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्ता कारक।
भी–निपात।

नहीं–रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'जानते' क्रिया की विशेषता।
कुटुंब–जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, संबंधकारक।

(थ) बीमारी–संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग।
है–क्रिया (अकर्मक), एकवचन, अन्य पुरुष, वर्तमान काल, कर्तृ वाच्य।
यहाँ–क्रियाविशेषण (स्थानवाचक क्रियाविशेषण)।
भी–निपात।

(द) जहाँ तक–स्थानवाचक क्रियाविशेषण।
कुछ–अनिश्चयवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिग, कर्म कारक।
हमें–पुरुषवाचक सर्वनाम, बहुवचन, पुल्लिग, कर्म कारक।
भावना–गुणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन।

(ध) अब–कालवाचक क्रियाविशेषण।
दायित्व–भाववाचक संज्ञा, एकवचन।
मैं–पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिग, कर्म कारक।
गहरा– विशेषण, परिमाणवाचक।

(न) जिलाधिकारी–व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग।
प्रमुख–विशेषण, गुणवाचक, 'लोगों' विशेष्य का विशेषण।
बुलाया गया–क्रिया, पुल्लिग, एकवचन।
मैं–पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिग, कर्ताकारक, उत्तम पुरुष।

(प) गए–क्रिया, बहुवचन, पुल्लिग।

(फ) मिला–क्रिया, सकर्मक, एकवचन, पुल्लिग।

(ब) थोड़ा–विशेषण, परिमाणवाचक, एकवचन।

(भ) आगे–अव्यय, संबंधबोधक।

(म) स्वयं–कर्ता, सर्वनाम, प्रथम पुरुष, एकवचन।

(य) गाँव की मिट्टी–संज्ञा, जातिवाचक, एकवचन, स्त्रीलिंग।
मैं तरस गया–अकर्मक क्रिया, पुल्लिग, एकवचन जातिवाचक कर्तृ वाच्य, भूतकाल।

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

1.	(क) iii	(ख) i	(ग) iii	(घ) i	(ङ) iii
2.	(क) i	(ख) iii	(ग) iii	(घ) i	(ङ) ii
	(च) i	(छ) ii	(ज) ii	(झ) iii	(ञ) i
	(ट) i	(ठ) ii	(ड) ii	(ढ) iii	(ण) ii

रस

1. (क) श्रृंगार रस को 'रसराज' कहते हैं।

(ख) 'रस' के बिना साहित्य आनंदहीन और अनुपयोगी हो जाता है, इसलिए रस को 'काव्य की आत्मा' कहा जाता है।

(ग) आचार्य भरतमुनि ने नाट्य-शास्त्र में रस की परिभाषा देते हुए कहा है–

विभावानुभाव व्यभिचारि संयोग रस निष्पत्तिः।

अर्थात विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी (संचारी) भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

(घ)

स्थायी भाव	**रस**
उत्साह	वीर रस
भय	भयानक रस

(ङ) 'विकट रूप धरि लंक जरावा' में रौद्र रस है।

(च) हँसते-खिलखिलाते छोटे बच्चों, पुत्र, पुत्री की बालसुलभ चेष्टाओं को देखकर मन में जब स्नेह का भाव उत्पन्न होता है, तब उसे 'वात्सल्य रस' कहते हैं।

(छ) रस की सर्वप्रथम चर्चा भरतमुनि के नाट्य-शास्त्र में की गई है।

(ज) अद्‌भुत रस का उदाहरण–

अखिल भुवन चर-अचर सब, हरिमुख में लखि मातु।
चकित भई गद्‌गद वचन, विकसित दृग पुलकातु।।

(झ) स्थायी भाव रस का मूल होता है। वे भाव जो सहृदय के मन में स्थायी रूप से विद्‌यमान रहते हैं और अनुकूल अवसर पाते ही जागृत हो जाते हैं, उन्हें 'स्थायी भाव' कहते हैं।

2. (क) विभाव के निम्नलिखित दो भेद होते हैं–

(i) **आलंबन विभाव–** जिस व्यक्ति या वस्तु के कारण मन में कोई स्थायी भाव जागृत हो जाते हैं, उस व्यक्ति या वस्तु को आलंबन विभाव कहते हैं; जैसे– रास्ते में चलते हुए अचानक सुंदर-सा हँसता-मुसकराता बच्चा दिख जाने पर मन में 'वत्सल' नामक स्थायी भाव उत्पन्न होता है। यहाँ 'सुंदर-सा बच्चा' आलंबन विभाव होगा।

(ii) **उद्‌दीपन विभाव–** जो वस्तुएँ या स्थितियाँ आलंबन द्‌वारा जाग्रत स्थायी भाव को अधिक उद्‌दीप्त कर दे या प्रबल बनाए, उसे 'उद्‌दीपन विभाव' कहते हैं; जैसे– सुंदर से बच्चे की सुंदरता, चपलता, मुसकान, हाव-भाव उद्‌दीपन विभाव हैं।

(ख) उद्‌दीपन विभाव और अनुभाव में मुख्य अंतर यह है कि उद्‌दीपन विभाव वे स्थितियाँ और वस्तुएँ होती हैं जो आश्रय के मन में स्थायी भाव बढ़ा देते हैं या उनमें प्रबलता ला देते हैं; जैसे– बच्चे की मुसकान, सुंदरता, चपलता आदि।

अनुभाव अर्थात अनुभव करना। आलंबन और उद्‌दीपन के द्‌वारा आश्रय के मन में स्थायी भाव जागृत होने और उद्‌दीपन होने पर आश्रय जो चेष्टाएँ उत्पन्न होती हैं, उन्हें अनुभाव कहते हैं; जैसे– सुंदर बच्चे को देखकर प्रसन्न होना, पुचकारना, चुटकी बजाकर उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना, मुसकराना आदि।

(ग) साहित्य भाषा में 'रस' का अर्थ है– आनंद अर्थात किसी कविता या साहित्य को पढ़ने-सुनने या नाटक को देखने से मन में आनंद की जो अनुभूति होती है, उसे 'रस' कहते हैं।

(घ) रस और उनके स्थायी भाव निम्नलिखित हैं–

रस	स्थायी भाव	रस	स्थायी भाव
शृंगार रस	रति (प्रेम)	रौद्र	क्रोध
हास्य	हास	वीर	उत्साह
करुण	शोक	भयानक	भय
वीभत्स	घृणा	वात्सल्य	वत्सल/वात्सल्य
अद्‌भुत	विस्मय	भक्ति	ईश्वरीय प्रेम (देवरति)
शांत	निर्वेद (वैराग्य)		

(ङ) संचारी भाव की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- संचारी भाव अपना प्रभाव छोड़कर स्थायी भाव में विलीन हो जाते हैं।
- संचारी भाव मन में संचरण करते रहते हैं।

(च) रस के निम्नलिखित चार अंग माने गए हैं–

(i) स्थायी भाव (ii) विभाव (iii) अनुभाव (iv) संचारी भाव

(i) **स्थायी भाव–** रस का मूल स्थायी भाव होता है। जो हृदय में स्थायी रूप से विद्‌यमान होते हैं। ये स्थायी भाव अनुकूल अवसर पाते ही जागृत हो उठते हैं, जिससे रस की निष्पत्ति होती है। इनकी संख्या 9 मानी जाती है।

जैसे– हाय! फूल-सी कोमल बच्ची
हुई राख की थी ढेरी।

इस उदाहरण में करुण रस है, जिसका स्थायी भाव 'शोक' है।

(ii) **विभाव–** जिन कारणों से स्थायी भाव जगता है, उसे 'विभाव' कहते हैं। इसके निम्नलिखित दो भेद हैं–

(क) **आलंबन विभाव–** जिस व्यक्ति या वस्तु के कारण मन में स्थायी भाव जागृत होता है। उसे 'आलंबन विभाव' कहते हैं।

उपर्युक्त उदाहरण में 'मृत पुत्री' आलंबन विभाव है।

(ख) **उद्‌दीपन विभाव–** जो आलंबन के माध्यम से स्थायी भाव को और प्रबल कर दे। उसे 'उद्‌दीपन विभाव' कहते हैं।

उपर्युक्त उदाहरण में फूल जैसी कोमल बच्ची का शरीर जलने के बाद राख हो जाना उद्‌दीपन विभाव है।

(iii) **अनुभाव–** आलंबन और उद्‌दीपन के द्‌वारा आश्रय के हृदय में स्थायी भाव जागृत होने और उद्‌दीपन होने पर आश्रय होने में उद्‌दीप्त चेष्टाओं को 'अनुभाव' कहते हैं।

उपर्युक्त उदाहरण में मृत पुत्री के पिता (आश्रय) का रोना, पछताना, प्रलाप करना आदि अनुभाव है।

(vi) **संचारी भाव–** आश्रय के मन में उत्पन्न होने वाले अस्थायी मनोविकारों को 'संचारी भाव' कहते हैं।

उपर्युक्त उदाहरण में चिंता, विवाद, जड़ता, दुख, स्मृति, चिंता आदि संचारी भाव हैं।

3. (क) हास्य रस (ख) करुण रस (ग) शांत रस
(घ) वीर रस (ङ) वियोग शृंगार रस (च) वात्सल्य रस
(छ) वियोग शृंगार रस (ज) भयानक रस (झ) करुण रस
(ञ) रौद्र रस (ट) करुण रस (ठ) करुण रस
(ड) अद्‌भुत रस (ढ) करुण रस (ण) शांत रस / करुण रस

4.

रस	स्थायी भाव	रस	स्थायी भाव
(क) हास्य	हास, हँसी	(ख) रौद्र	क्रोध
(ग) वीभत्स	घृणा (जुगुप्सा)	(घ) भक्ति	निर्वेद, वैराग्य
(ङ) वीर	उत्साह	(च) करुण	शोक

5. रस और उससे संबंधित काव्य-पंक्तियाँ—

(क) वियोग श्रृंगार रस – मैं नीर भरी दुख की बदली
विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना।
परिचय इतना इतिहास यही
कल उमड़ी थी मिट आज चली।

(ख) वीभत्स रस – कोउ अतड़िनि की पहिरि माल इतरात दिखावत।
कोउ चरबी लैचोप सहित निज अंगनि लावत।
कोउ मुंडनि लै मालि गोद कंदुक लौं डारत।
कोउ रुंडनि पै बैठि करेजौ फारि निकारत।

(ग) शांत रस – मन अवसर पछितैहैं बीते।
दुर्लभ देह पाइ हरि पद भजु, करम वचन अरु हीते।
अब नाथहि अनुराग जागु, जड़ त्याग दुरासा जीते।
बुझै न काम अगिनि तुलसी कहुँ, विषय भोग बहु घी ते।

(घ) करुण रस – तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई।
रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी दया नहीं आई।

(ङ) भयानक रस – नभ ते झटपट बाज लखि, भूल्यो सकल प्रपंच।
कंपित तन व्याकुल नयन, लावक हिल्यो न रंच।

6. (क) वत्सल
(ख) उत्साह
(ग) उत्साह

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नोत्तर

2. (क) श्रृंगार रस (ख) रौद्र रस (ग) हास्य रस (घ) करुण रस (ङ) रौद्र रस
(च) वीर रस (छ) करुण रस (ज) हास्य रस (झ) श्रृंगार रस (ञ) भक्ति रस
(ट) हास्य रस (ठ) करुण रस (ड) वात्सल्य रस (ढ) रौद्र रस (ण) रौद्र रस
(त) भयानक रस (थ) वात्सल्य रस (द) भक्ति रस (ध) भक्ति रस

3. (क) 'रति' श्रृंगार रस का स्थायी भाव है।
(ख) करुण रस का स्थायी भाव 'शोक' है।
(ग) 'आराम' शब्द में राम छिपा, जो भव बंधन को खोता है।
'आराम' शब्द का ज्ञाता तो बिरला ही योगी होता है।।
(घ) वीर रस

4. (क) करुण रस का उदाहरण–

"साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते
और दाहिना दया दृष्टि पाने की ओर बढ़ाए।"

(ख) इन काव्य-पंक्तियों में हास्य रस है।

(ग) 'उत्साह' वीर रस का स्थायी भाव है।

(घ) वात्सल्य रस का स्थायी भाव 'वात्सल्यता' (अनुराग) है।

(ङ) शृंगार रस के स्थायी भाव हैं– (i) संयोग शृंगार रस (ii) वियोग शृंगार रस।

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

1. (क) iv (ख) iv (ग) i (घ) ii (ङ) i

(च) i (छ) i (ज) iv (झ) iv (ञ) ii

2. (क) ii (ख) i (ग) i (घ) iii (ङ) ii

3. (क) iii (ख) i (ग) ii (घ) i (ङ) i

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–1

1. (क) iii	(ख) ii	(ग) iii	(घ) i	(ङ) i
2. (क) i	(ख) i	(ग) iii	(घ) i	(ङ) i
3. (क) i	(ख) i	(ग) i	(घ) i	(ङ) iii
4. (क) iii	(ख) iv	(ग) iii	(घ) i	(ङ) i

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–2

1. (क) iii	(ख) i	(ग) ii	(घ) iii	(ङ) i
2. (क) i	(ख) ii	(ग) ii	(घ) iii	(ङ) ii
3. (क) iii	(ख) iii	(ग) iii	(घ) iii	(ङ) ii
4. (क) i	(ख) ii	(ग) iv	(घ) iv	(ङ) i

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–3

1. (क) ii	(ख) ii	(ग) i	(घ) iii	(ङ) i
2. (क) i	(ख) iii	(ग) ii	(घ) i	(ङ) iii
3. (क) iii	(ख) iii	(ग) iii	(घ) ii	(ङ) i
4. (क) iii	(ख) i	(ग) iv	(घ) i	(ङ) i

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–4

1. (क) iii	(ख) ii	(ग) iii	(घ) ii	(ङ) ii
2. (क) ii	(ख) iii	(ग) ii	(घ) i	(ङ) i
3. (क) iii	(ख) ii	(ग) i	(घ) iii	(ङ) ii
4. (क) iii	(ख) i	(ग)	(घ) i	(ङ) ii

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–5

1. (क) iii	(ख) iii	(ग) iii	(घ)	(ङ) iii
2. (क) iv	(ख) ii	(ग) iii	(घ) i	(ङ) iii
3. (क) i	(ख) ii	(ग) ii	(घ) iii	(ङ) i
4. (क) i	(ख) i	(ग) iii	(घ)	(ङ) i

खंड-ग : लेखन

1. अनुच्छेद-लेखन

1. संयुक्त परिवार की आवश्यकता

आजकल अधिकतर भारतीय परिवार एकल परिवार के स्वरूप बन चुके हैं। भारत में परिवार का आशय संयुक्त परिवार से ही माना जाता था। 21वीं सदी के शुरुआती दौर में ही हमारे देश से संयुक्त परिवार प्रणाली का ह्रास होना शुरू हो गया। संयुक्त परिवार तेज़ी से टूटकर एकल परिवार का रूप लेने लगे। घर से बाहर दूसरे शहरों या राज्यों में नौकरी, व्यवसाय आदि के कारण एकल परिवार को तेज़ी से प्रोत्साहन मिला, जिनकी मुख्य वजह थी, गाँवों में रोज़गार के अवसरों की कमी। आजीविका के लिए अपने घर को छोड़कर लोगों को बाहर निकलना पड़ा। कहीं-कहीं परिवार के टूटने के बड़ा कारण युवाओं की संकीर्ण मानसिकता भी है। अपनी स्वार्थ व स्वतंत्रता के वशीभूत हो जाने के कारण भी कुछ घरों का विघटन होता गया। एकल परिवार के अनेक फायदे भी हैं। एक तरफ जहाँ संयुक्त परिवार में आर्थिक बोझ बढ़ जाता है। कमाने वाले बहुत कम होते हैं, जबकि खर्च करने वालों व खाने वालों की संख्या अधिक होती हैं। एकल परिवार के उदय से हटकर अगर देखें तो व्यक्ति को किसी-न-किसी आर्थिक कार्य में संलग्न होने में वृद्धि हुई है। वहीं संयुक्त परिवार से अलग होकर बच्चे के पालन-पोषण में एकल परिवारों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। रामायण, गीता आदि के उपदेशात्मक कहानियाँ जहाँ बच्चे अपने परिवार में सीख लिया करते थे। वहीं अब उन्हें यह भी पता नही होता कि रामायण में श्रीराम और भक्त हनुमान कौन थे। अगर विवरणों द्वारा कहा जाए तो एकल परिवार एक विवशता का ही परिणाम है।

2. छात्र स्वयं करें।

3. बदलती जीवन-शैली

आज हम बात करेंगे, हमारे मन की, युवा मन की और उस पर पड़ रहे आधुनिक जीवन-शैली के प्रभावों की। आधुनिक जीवन शैली ने हमें हमारी नैतिकता, संस्कार, आदर-सम्मान, अच्छी सोच, नींद और भी ना जाने ऐसी ही कितनी बहुमूल्य चीज़ों से हमें दूर करके रखा हुआ है, जिसका हमारी ज़िंदगी में शामिल होना बहुत आवश्यक है। अब देखिए ना! पैसे कमाने की होड़, हमारे दिखावे और शौक, नाइट क्लब पार्टियाँ, दोस्तों के साथ घूमना-फिरना, फ़िल्में देखना और टी॰वी॰ चैनलों से उपजी इस आधुनिक जीवन-शैली के कारण, युवा मन इन सब चीज़ों की ओर जाने-अंजाने ही आकर्षित हो चला है। आज ग्लोबलाइजैशन, इंटरनेट और तकनीक में आ रहे बदलाव ने समाज के साथ-साथ खासकर युवाओं को इस तरह प्रभावित किया है कि कुछ वर्षों में ही जीवन-शैली में जबर्दस्त बदलाव आ गया है। जीने का ये अंदाज़ बिल्कुल नया है, रहन-सहन और खानपान की शैली हो या फिर लोगों के कामकाज और सोचने का तरीका, सभी में बदलाव आ चुका है। आज हम फास्ट लाइफ जीना चाहते हैं, सब कुछ शार्टकट तरीके से जल्दी हासिल करना चाहते हैं। मेहनत कम करना चाहते हैं, मेहनत के कम होने के साथ-साथ आज हमारा रहन-सहन, खाने-पीने का स्तर भी कम हो गया है। कल तक हम जहाँ घर का खाना खाना पसंद करते थे, आज उसकी जगह होटलों के पिज़्ज़ा-बर्गर ने ले ली है। हमारे संस्कार की बात करें तो आज पाँव छूने की जगह, हल्की-सी कमर भी झुक जाए तो गनिमत है और इन्हीं सब कारणों से युवा अपने मूल्यों, नैतिकताओं, संस्कार, समाज और परिवार के प्रति लापरवाह होते चले जा रहे हैं। अगर हम देखें तो आज युवा में जीवन के विकास के ज़रूरी अनुशासन और मूल्यों का स्थान आधुनिक साजों-सामान, ब्रांडेड कपड़ों और उन्मुक्त जीवन ने ले लिया है। और इनकी गिरफ़्त में आकर युवा मन शराब-सिगरेट पीना, मादक दवाएँ लेना, चुपचाप सैर सपाटा करना, स्कूलों-कॉलेजों से गायब रहना, झूठ बोलना, इंटरनेट पर अश्लिलता से सराबोर होना, ऐसे कपड़े पहनना जिन्हें वे घर में पहनने का साहस नहीं जुटा सकते, जैसी चीज़ों को आधुनिकता के नाम पर अपनी शान समझते हैं। और यदि समय रहते इसे सुधारा नहीं गया तो इसके परिणाम काफी गंभीर हो सकते हैं और इससे बचने के लिए हमें और खासकर युवाओं को जागरुक, जिम्मेदार और क्या वाकई में सही है और क्या गलत, इसका फ़ैसला करने की क्षमता होना ज़रूरी है।

4. भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ

हमारा भारत देश विश्व की प्राचीनतम सभ्यता एवं संस्कृति का वाहक महान देश है। इसे विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश भी कहा जाता है। यहाँ की संस्कृति अत्यंत प्राचीन है। जहाँ विश्व की अनेक संस्कृतियाँ अंधकार के गर्त में विलीन हो गईं, वहीं भारत की संस्कृति विश्व में अपनी श्रेष्ठता की पताका को अनवरत फहरा रही है। हमारी संस्कृति में सत्य, अहिंसा, परोपकर, सदाशयता, उच्च विचार, करुणा एवं दया के भावों को अपनाया गया है। भारत एक शांतिप्रिय राष्ट्र है, जो विश्व में शांति बनाए रखने का प्रबल समर्थक है। इसका पंचशील और सहअस्तित्व में पूरा विश्वास है। भारत किसी पर आक्रमण करने में विश्वास नहीं रखता। यह तो परमाणु-शक्ति का उपयोग भी शांतिपूर्ण कार्यों के लिए करने हेतु कृतसंकल्प है। यहाँ का भौगोलिक सौंदर्य अनुपम है। भारत को तीन ओर से समुद्र ने घेरा हुआ है। यहाँ के पर्वत और उनसे निकलने वाले झरने तथा नदियाँ देश की शोभा में चार चाँद लगाते हैं। यहाँ की हिमाच्छादित पर्वत चोटियों पर सूर्योदय एवं सूर्यास्त के दृश्य अत्यंत मनोहरी प्रतीत होते हैं। भारत में कहीं पर्वत हैं तो कहीं मरुभूमि, कहीं मैदान हैं तो कहीं पठार। यहाँ के उपजाऊ खेतों में हरी-भरी फ़सलें लहलहाती हैं। यहाँ के समुद्रों की छटा भी देखते ही बनती है। कश्मीर को तो पृथ्वी का स्वर्ग कहते हैं। हमारा प्यारा राष्ट्र चहुँमुखी विकास कर रहा है। विश्व में हमारी प्रतिष्ठा है। हमारा राष्ट्र स्वावलंबन की दिशा में अग्रसर है। राष्ट्र वैश्वीकरण की नीति पर चलकर भरपूर आर्थिक विकास कर रहा है।

5. जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान

आजकल अधिकांश लोग अपनी जन्मभूमि को छोड़कर अनेक स्थानों पर धन अर्जित करने के लिए चले जाते हैं जबकि वे सभी चाहते तो अपनी जन्मभूमि को ही स्वर्ग बना सकते थे परंतु उन्होंने सरल मार्ग का चयन करके इसे अनदेखा कर दिया। उसी का शिक्षण यह प्रकृति सभी को अब कठोरतापूर्वक समझा रही है। मैं इस सत्य को स्वीकार करता हूँ कि सभी को अपना भरण-पोषण करने के लिए धन की आवश्यकता है परंतु उतना ही धन जितने में कोई मनुष्य ठीक प्रकार से अपना भरण-पोषण कर सके, परंतु आजकल लोगों की कामनाएँ उससे कहीं अधिक बढ़ गई हैं। आजकल लोग मात्र धन के ही पीछे भाग रहे हैं। उनके लिए तो धन ही सर्वोपरि हो गया है। हम सभी चाहें तो अपनी जन्मभूमि को ही स्वर्ग बना सकते हैं परंतु इसके लिए हमने जिस स्थान पर जन्म लिया है हम सभी को वहीं रहना होगा और अपने उत्तम श्रम द्वारा ही उस स्थान का निर्माण करना होगा। सभी अनावश्यक कामनाओं का त्याग करके, स्वयं विचार करना होगा कि सभी को क्या करना है? परंतु उससे पूर्व मेरी इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि इस प्रकृति एवं समय से अधिक शक्तिशाली कोई नहीं। इस कारणवश हमें जो कुछ भी करना हो अवश्य करना चाहिए। परंतु इस बात का ध्यान रखकर कि हम सभी को प्रकृति के नियमों का कठोरता से पालन करना होगा क्योंकि जो कोई भी इस प्रकृति के साथ खेलने का प्रयत्न करेगा अर्थात इसके साधनों का अपने स्वार्थ के अधीन होकर दुरुपयोग करेगा। तब-तब उचित समय पर यह प्रकृति अपने रौद्र स्वरूप को अवश्य धारण करके सभी को इसका ज्ञान अवश्य करवाएगी।

6. छात्र स्वयं करें।

7. आधार कार्ड मेरी पहचान

आधार कार्ड भारत सरकार द्वारा भारत के नागरिकों को जारी किया जाने वाला पहचान-पत्र है। इसमें 12 अंकों की एक विशिष्ट संख्या छपी होती है, जिसे भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (भा॰वि॰प॰प्रा॰) जारी करता है। यह संख्या, भारत में कहीं भी, व्यक्ति की पहचान और पते का प्रमाण होगा। भारतीय डाक द्वारा प्राप्त और यू॰आई॰डी॰ए॰आई॰ की वेबसाइट से डाउनलोड किया गया ई-आधार दोनों ही समान रूप से मान्य हैं। कोई भी व्यक्ति आधार के लिए नामांकन करवा सकता है, बशर्ते वह भारत का निवासी हो और यू॰आई॰डी॰ए॰आई॰ द्वारा निर्धारित सत्यापन प्रक्रिया को पूरा करता हो, चाहे उसकी उम्र और लिंग (जेंडर) कुछ भी हो। प्रत्येक व्यक्ति केवल एक बार नामांकन करवा सकता है। नामांकन नि:शुल्क है। आधार कार्ड एक पहचान-पत्र मात्र है तथा यह नागरिकता का प्रमाणपत्र नहीं है। आधार दुनिया की सबसे बड़ी बॉयोमीट्रिक आईडी प्रणाली है। विश्व बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री पॉल रोमर ने आधार को 'दुनिया में सबसे परिष्कृत आईडी कार्यक्रम' के रूप में वर्णित किया। आधार कार्ड निवास का सबूत माना जाता है और नागरिकता का सबूत नहीं है। आधार स्वयं भारत में निवास के लिए कोई अधिकार नहीं देता है। भारत की आधार परियोजना संयुक्त राज्य अमेरिका के सोशल सिक्योरिटी नंबर की तरह नहीं है क्योंकि इसमें अधिक उपयोग और कम सुरक्षा है।

8. सोशल मीडिया

सोशल मीडिया एक ऐसा मीडिया है, जो बाकी सारे मीडिया (प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और समानांतर मीडिया) से अलग है। सोशल मीडिया इंटरनेट के माध्यम से एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफॉर्म (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम) आदि का उपयोग कर पहुँच बना सकता है। आज के दौर में सोशल मीडिया ज़िंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है, जिसके बहुत सारे फीचर हैं, जैसे कि सूचनाएँ प्रदान करना, मनोरंजन करना और शिक्षित करना मुख्य रूप से शामिल हैं। सोशल मीडिया एक अपरंपरागत मीडिया है। यह एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जिसे इंटरनेट के माध्यम से पहुँच बना सकते हैं। सोशल मीडिया एक विशाल नेटवर्क है, जो कि सारे संसार को जोड़े रखता है। यह संचार का एक बहुत अच्छा माध्यम है। यह द्रुत गति से सूचनाओं के आदान-प्रदान करने, जिसमें हर क्षेत्र की खबरें होती हैं, को समाहित किए होता है। सोशल मीडिया सकारात्मक भूमिका अदा करता है जिससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। सोशल मीडिया के जरिए ऐसे कई विकासात्मक कार्य हुए हैं जिनसे कि लोकतंत्र को समृद्ध बनाने का काम हुआ है जिससे किसी भी देश की एकता, अखंडता, पंथनिरपेक्षता, समाजवादी गुणों में अभिवृद्धि हुई है। विगत आम चुनाव में सोशल मीडिया के उपयोग से वोटिंग प्रतिशत बढ़ा है। साथ-ही-साथ युवाओं में चुनाव के प्रति जागरूकता बढ़ी है। लोकप्रियता के प्रसार में सोशल मीडिया एक बेहतरीन प्लेटफॉर्म है, जहाँ व्यक्ति स्वयं को अथवा अपने किसी उत्पाद को ज्यादा लोकप्रिय बना सकता है। आज फ़िल्मों के ट्रेलर, टी॰वी॰ प्रोग्राम का प्रसारण भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है। वीडियो तथा ऑडियो चैट भी सोशल मीडिया के माध्यम से सुगम हो पाई है, जिनमें फेसबुक, व्हॉट्सऐप, इंस्टाग्राम कुछ प्रमुख प्लेटफॉर्म हैं।

9. क्षमा : एक साहसिक कदम

मानव जीवन में क्षमा का क्या महत्व है? सभ्य समाज में क्षमायाचना और क्षमादान का विशेष महत्व है। क्षमायाचना और क्षमादान चाहे दो आत्मीय जनों के बीच हो अथवा समूहों या राष्ट्रों के बीच। यदि ईमानदारी के साथ क्षमायाचना की जाती है, तो यह अपमान की भावना का निराकरण करती है। क्षमा में बहुत बड़ी शक्ति होती है। क्षमाशीलता का भारी महत्व है, पर हम इसके बारे में बहुत कम ध्यान देते हैं। अपने बच्चों में क्षमाशीलता की भावना पैदा करने का हम कोई उपाय नहीं करते। क्या कारण है कि ज्यादातर लोग क्षमाशीलता को अपनाना नहीं चाहते? असल में, हममें से बहुत से लोग हमेशा जीतते रहने, सफलता प्राप्त करने और हर काम को चुस्त-दुरुस्त ढंग से करने की भावना से इतना ओतप्रोत रहते हैं कि क्षमाशीलता के महत्व को समझ ही नहीं पाते। उस ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। क्षमायाचना करने के लिए हममें अपनी गलती, असफलता और कमजोरी को स्वीकार करने की क्षमता होना जरूरी है। पर निरंतर जीत के लिए हम इतने आतुर होते हैं कि अपनी गलतियों और कमजोरियों को स्वीकार करने की हमें फुरसत ही नहीं मिलती। क्षमायाचना कितनी असरकारी है? ईमानदारी से माँगी गई क्षमायाचना वांछित प्रभाव डालती है। क्या क्षमायाचना के सही व गलत तरीके भी होते हैं? यदि सही ढंग से क्षमा नहीं माँगी गई तो वह प्रभावहीन हो जाती है। सही क्षमायाचना तब होती है, जब हम स्पष्ट शब्दों में अपनी गलती को रेखांकित कर क्षमा माँग लेते हैं। सही क्षमायाचना का एक और तत्व है। वह यह है कि हम स्पष्ट कर देते हैं कि किन कारणों से, किन परिस्थितियों में हमसे यह व्यवहार हुआ। हमारी क्षमायाचना से यह जाहिर हो जाना चाहिए कि वास्तव में हम अपने व्यवहार पर दुखी हैं। यह व्यवहार कटुता दूर करके संबंधों को तत्काल सामान्य बना देता है। क्या क्षमा माँगना कमजोरी का प्रतीक नहीं है? लोग क्षमायाचना को दुर्बलता का पर्याय समझ लेते हैं। जबकि क्षमायाचना शक्ति का प्रतीक होती है। यह ईमानदारी की भी परिचायक है। क्षमायाचना के लिए चारित्रिक दृढ़ता भी जरूरी है। क्षमा माँगकर हालांकि हम अपनी दुर्बलता जाहिर करते हैं, पर साथ ही यह भी स्पष्ट करते हैं कि कुछ भी हो, मैं एक अच्छा आदमी हूँ, दिल का बुरा नहीं।

10. भ्रूण हत्या : सामाजिक कलंक

'भ्रूण हत्या' से तात्पर्य है—जब किसी महिला के गर्भ में भ्रूण पल रहा हो, तब उसका परीक्षण करवाकर जन्म लेने से पहले ही भ्रूण को मार डालना। इसका अर्थ हुआ कि गर्भस्थ शिशु की हत्या कर देना। आमतौर पर देखा गया है कि भ्रूण हत्या में कन्या भ्रूण का प्रतिशत अधिक है। इसके पीछे बीमार मानसिकता होती है। इसके कारण कई राज्यों में लिंगानुपात में भारी गिरावट आई है। वैसे तो हमारी संस्कृति में नारी की पूजा की बात की जाती है, पर अभी तक हमारे समाज में नारी के प्रति सम्मान का भाव पूरी तरह से उत्पन्न नहीं हुआ है। हमारा समाज अभी भी पुत्रमोह में अंधा होकर 'कन्या भ्रूण हत्या' जैसा कुकर्म कर बैठता है। इस प्रकार के कार्य में नारी के प्रति उसकी दूषित मानसिकता का परिचय मिलता है। यह एक अनैतिक

कार्य है। उसके इस काम में अनेक लोभी डॉक्टर भी मदद करते हैं। वे अपने तुच्छ स्वार्थ की पूर्ति हेतु सरकारी कानून की भी परवाह नहीं करते। कन्या भ्रूण हत्या के कई कारण हैं। भारतीय समाज में बेटी को पराया धन माना जाता है। उसे सदैव बेटे से कमतर आँका जाता है। दहेज का बढ़ता चलन भी कन्या भ्रूण हत्या के लिए दोषी है। कन्या को पिता की संपत्ति में बराबरी का हक न मिल पाए, इसके लिए भी यह दुष्कर्म किया जाता है। पुत्र को परिवार की कमाई का माध्यम माना जाता है और पुत्री को खर्च का। कन्या भ्रूण हत्या का सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह हुआ कि लड़कों के अनुपात में लड़कियों की संख्या कम हुई। हरियाणा में तो यह स्थिति और भी खराब है। वहाँ 1000 लड़कों के मुकाबले 850 लड़कियाँ ही रह गई हैं। अब सरकार के प्रयासों से इस स्थिति में सुधार आया है। हमें कन्या भ्रूण हत्या को पूरी ताकत के साथ रोकना होगा। कन्या को भी जन्म लेने का बराबर अधिकार है। सरकार का अभियान 'बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ' इसी प्रयास की ओर एक कदम है। कानून के साथ-साथ जन-चेतना भी जगानी होगी। कन्या भ्रूण हत्या के दोषियों को कठोर दंड मिलना चाहिए। हमें इस सामाजिक कलंक को मिटाना ही होगा।

11. राष्ट्रीय एकता

देश में प्रगति, शांति और सुरक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एकता बहुत ही जरूरी है। हमारा देश विभिन्न धर्म और जाति के भेद-भाव के चलते एकता के पाठ को भूल-सा गया है। कहीं अमीरी-गरीबी की लक्ष्मण रेखा तो कही उत्तर-दक्षिण का भेद, कहीं मैं हिंदू-वह मुस्लिम तो कहीं मैं ब्राह्मण-वह छोटी जाति का। इन्हीं विविधताओं ने हमें एक दूसरे से दूर कर दिया है, जिस वजह से राष्ट्र कमजोर पड़ जाता है और प्रगति में रुकावट आती है। इन भिन्न-भिन्न त्रासदियों से ऊपर उठकर और एकजुट होकर राष्ट्र को उन्नति के पथ पर ले जाने में हाथ बँटाना चाहिए। क्या हर वर्ग के लोग मिलजुलकर सलमान खान की पिक्चर और सचिन तेंदुलकर के शतक का इंतज़ार नहीं करते। देश की सीमाओं पर जब कोई खतरा मंडराता है तो सब धर्म जाति भूलकर एकजुट हो सेना का साथ नहीं देते। अगर यह सब करते हैं तो क्यों न एकता के बँधकर में बंदकर हम अपने राष्ट्र को उन्नति और शांति के नए शिखर पर ले चलें। यह एकता तभी संभव होगी जब हम सब भेदों को भुला संगठित हो राष्ट्र-निर्माण में अपना योगदान देंगे।

12. मेरी प्रिय फ़िल्म

मुझे फ़िल्में देखना बहुत पसंद है। मैंने आज तक अनेक फ़िल्में देखी हैं। राजकपूर, देवानंद एवं दिलीप कुमार जैसे पुराने अभिनेताओं से लेकर वर्तमान नायकों आमिर खान, अक्षय कुमार तक की फ़िल्में मैंने देखी हैं। अमिताभ बच्चन की 'शोले', सलमान खान की 'हम आपके हैं कौन', आमिर खान की 'थ्री इडियट्स', ऋषि कपूर की 'हिना', सैफ अली खान की 'लव आजकल' जैसी फ़िल्में मुझे काफ़ी अच्छी लगीं। इसके अतिरिक्त वर्तमान फ़िल्मों में 'जय हो', 'किक' एवं 'हाई-वे' भी मेरी पसंदीदा फ़िल्में हैं। मेरी प्रिय फ़िल्मों की सूची लंबी है। इनमें से कौन सबसे अच्छी है, इसका चुनाव करना मेरे लिए काफ़ी मुश्किल है, किंतु इन सभी फ़िल्मों में फ़िल्म 'दोस्ती' को मैं अपनी सबसे प्रिय फ़िल्म कहूँ, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। राजश्री प्रोडक्शन द्वारा निर्मित यह फ़िल्म कहानी, गीत-संगीत, अभिनय हर पैमाने पर बिल्कुल खरी उतरती है। 'दोस्ती' फ़िल्म 1964 ई० में रिलीज हुई थी। इसमें संजय खान, लीला चिटनिस, सुधीर कुमार, सुशील कुमार, बेबी फरीदा जलाल इत्यादि कलाकारों ने अभिनय किया है। सुधीर कुमार एवं सुशील कुमार मुख्य भूमिका में हैं। इस फ़िल्म के गीत मजरूह सुल्तानपुरी ने लिखे हैं तथा संगीत दिया था लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल ने। इस फ़िल्म का निर्देशन सत्येन बोस ने किया था। फ़िल्म 'दोस्ती' की कहानी इस प्रकार है-रामू (सुशील कुमार) अपने माँ-बाप की इकलौती संतान है, जो 'माउथ ऑर्गन' बजाने में माहिर एवं पढ़ाई-लिखाई में तेज़ है। उसके पिता जी एक फैक्ट्री में काम करते हैं। काम करते हुए एक दिन उनका मौत हो जाती है। यह हिंदी सिनेमा की पहली ऐसी फ़िल्म थी, जो प्रेमी-प्रेमिका के प्रेम पर आधारित न होने के बावजूद सुपर हीट रही। राजश्री प्रोडक्शन की फ़िल्मों की सबसे बड़ी विशेषता उनका संगीतमय एवं पारिवारिक होना होता है।

13. छात्र स्वयं करें।

14. बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसके जीवन में सुख-दुख का आना-जाना लगा रहता है। उसके अलावा दिन-प्रतिदिन की समस्याएँ उसे तनावग्रस्त करती हैं। इससे मुक्ति पाने के लिए वह अपने मन की बातें किसी से कहना-सुनना चाहता है। ऐसे में उसे अत्यंत

निकटस्थ व्यक्ति की जरूरत महसूस होती है। इस जरूरत को मित्र ही पूरी कर सकता है। मनुष्य को मित्र की आवश्यकता सदा से रही है और आजीवन रहेगी। जीवन में सच्चे मित्र का बहुत महत्व है। एक सच्चे मित्र का साथ व्यक्ति को उन्नति के पथ पर ले जाता है और बुरे व्यक्ति का साथ पतन की ओर अग्रसर करता है। सच्चा मित्र जहाँ व्यक्ति को अवगुणों से बचाकर सद्गुणों की ओर ले जाता है वहीं कपटी मित्र हमारे पैरों में बँधी चक्की के समान होता है जो हमें पीछे खींचता रहता है। यदि हमारा कोई मित्र जुआरी या शराबी निकला तो उसका प्रभाव एक न एक दिन हम पर अवश्य पड़ना है। इसके विपरीत सच्चा मित्र सुमार्ग पर ले जाता है। सच्चा मित्र अपने मित्र को कुसंगति से बचाकर सन्मार्ग पर ले जाता है और उसके गुणों को प्रकटकर सबके सामने लाता है। मित्रता अनमोल वस्तु है जो जीवन में कदम-कदम पर काम आती है। एक सच्चा मित्र मिल जाना गर्व एवं सौभाग्य की बात है। जिसे सच्चा मित्र मिल जाए, उसे सुख का खजाना मिल जाता है। हमें मित्र बनाने में सावधानी बरतना चाहिए। एक सच्चा मित्र मिल जाने पर मित्रता का निर्वहन करना चाहिए। सच्चे मित्र के रूठने पर उसे तुरंत मना लेना चाहिए। हमें भी मित्र के गुण बनाए रखना चाहिए, क्योंकि कहा भी गया है—विपति कसौटी जे कसे तेई साँचे मीत।

15. पर्वतारोहण

पहाड़ की चढ़ाई ने लंबे समय से साहसिक साधकों को मोहित किया है। अधिक-से-अधिक पर्वतारोहण पर्वतों के विकास के साथ, इन दिनों लोगों को इस रोमांचक खेल का अनुभव करने का अधिक मौका मिल रहा है। जो लोग पर्वतारोहण करने के लिए पर्याप्त साहस नहीं कर रहे हैं, लेकिन अभी भी इसी तरह के रोमांच का अनुभव करने के लिए तरस रहे हैं, वे इसके एक छोटे संस्करण के लिए जा सकते हैं जो रॉक क्लाइम्बिंग है। जबकि पहाड़ पर चढ़ना अधिक चुनौतीपूर्ण और खतरनाक है और इसके लिए अधिक ध्यान और दृढ़ विश्वास की आवश्यकता होती है। चट्टान पर चढ़ना कम जोखिम भरा होता है क्योंकि व्यक्ति को चट्टान पर चढ़ना आवश्यक होता है जो पहाड़ जितना ऊँचा नहीं होता। रॉक क्लाइम्बिंग में बहुत अधिक कौशल की आवश्यकता नहीं होती है और आपको गाइड के निर्देशों की मदद से भी किया जा सकता है, भले ही आपको खेल के बारे में कोई पूर्व जानकारी न हो। हालांकि, पर्वतारोहण के लिए जाने की योजना बनाने वालों को इस बारे में जानकारी जुटानी चाहिए कि इस खेल को कैसे किया जाता है और इसमें कौन-कौन से जोखिम शामिल हैं। यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है कि आप इस खेल में शामिल होने के लिए शारीरिक रूप से फिट हैं। किसी ऐसे व्यक्ति से बात करना उचित है जो इस साहसिक खेल को लेने की योजना बनाने से पहले पहाड़ पर चढ़ने के पहले अनुभव को प्रस्तुत कर सकता है। मैंने रॉक क्लाइम्बिंग की कोशिश की है और अनुभव कमाल का था। मैं पहाड़ पर चढ़ने की भी कोशिश करना चाहूँगा लेकिन मुझे पहले इसके लिए पर्याप्त साहस जुटाने की जरूरत है।

16. आधुनिक शिक्षा और रोज़गार

सामान्य रूप से कहा और माना जा सकता है कि शिक्षा और रोज़गार का आपस में कोई संबंध नहीं है। शिक्षा का मूल प्रयोजन और उद्देश्य व्यक्ति की सोई शक्तियाँ जगाकर उसे सभी प्रकार से योग्य और समझदार बनाना है। रोज़गार की गारंटी देना शिक्षा का काम या उद्देश्य वास्तव में कभी नहीं रहा, यद्यपि आरंभ से ही व्यक्ति अपनी अच्छी शिक्षा-दीक्षा के बल पर अच्छे-अच्छे रोज़गार भी पाता आ रहा है। परंतु आज पढ़ने-लिखने या शिक्षा पाने का अर्थ ही यह लगाया जाने लगा है कि ऐसा करके व्यक्ति रोज़ी-रोटी कमाने के योग्य हो जाता है। दूसरे शब्दों में आज शिक्षा का सीधा संबंध तो रोजगार के साथ जुड़ गया है, पर शिक्षा को अभी तक रोज़गारोन्मुख नहीं बनाया जा सका। स्कूलों-कॉलेजों में जो और जिस प्रकार की शिक्षा दी जाती है, वह व्यक्ति को कुछ विषयों के नामादि स्मरण कराने या साक्षर बनाने के अलावा कुछ नहीं कर पाती। परिणामस्वरूप साक्षरों के लिए क्लर्की, बाबूगीरी आदि के जो थोड़े से धंधे—नौकरियाँ आदि हैं, व्यक्ति पा जाता है। अतः उसमें सुधार लाया जाना आवश्यक है। सुधार लाते समय इस बात का ध्यान रखा जा सकता है कि शिक्षा को रोज़गारोन्मुख कैसे बनाया जाए? देश-विदेश में आज जो भिन्न प्रकार के तकनीक विकसित हो गए या हो रहे हैं, उन सबको शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए। कविता, कहानी और साहित्यिक विषयों का भाषा-शास्त्र आदि का गूढ़-ज्ञान केवल उन लोगों के लिए सुरक्षित रखा जाना चाहिए जो इन विषयों में स्वतंत्र और गहरी अभिरुचि रखते हैं। अब जब शिक्षा का उद्देश्य रोज़गार पाना बन ही गया है तो पुराने ढर्रे पर चलते जाकर लोगों का धन, समय और शक्ति नष्ट करने, उन्हें मात्र साक्षर बनाकर छोड़ देने का कोई अर्थ नहीं है। ऐसा करना अन्याय और अमानवीयता है।

17. मधुर वचन हैं औषधि

बात करते समय किसी के मन को मोह लेने की मोहिनी शक्ति का नाम मधुर भाषण है। किसी की बड़ाई करते हुए लोग कहते हैं कि अमुक व्यक्ति बात करता है तो मानों मिसरी घोल देता है। दूसरा व्यक्ति एक अन्य व्यक्ति की प्रशंसा करता हुआ कहता है कि उसकी वाणी से तो मानों फूल झड़ते हैं। यह मिसरी घोलना और फूल झड़ना मीठी वाणी के ही संकेत हैं। व्यक्ति द्वारा बोले गए मधुर-कोमल शब्द जहाँ मित्रता का विस्तार करते हैं, वहीं कटु-कठोर शब्द शत्रु-भाव बढ़ाते हैं। मनुष्य-मनुष्य का संबंध वस्तुओं के आदान-प्रदान पर उतना निर्भर नहीं करता, जितना कि शब्दों के आदान-प्रदान पर करता है। व्यवहार में देखने में आता है कि अपने घर आए व्यक्ति के लिए यदि आप स्वागत के दो शब्द कह देते हैं, तो आपके द्वारा की गई साधारण अतिथि-सेवा भी उसे अच्छी ही लगेगी, किंतु यदि उसके खान-पान तथा रहन-सहन की समुचित व्यवस्था करने पर भी आप कुछ कड़वी-कठोर बात कर जाते हैं तो सारा करा-धरा व्यर्थ हो जाता है और सत्कार के स्थान पर आप उसके द्वेष के पात्र बन जाते हैं। मनुष्य के कटु-कठोर वचन कहीं-कहीं अत्यधिक अनिष्टकारी सिद्ध होते हैं। द्रौपदी के कड़वे वचन दुर्योधन के अंत:करण में शूल-से जा गड़े और परिणाम महाभारत के रूप में सामने आया। सयाने लोग कहते हैं कि 'तलवार का घाव समय पर भर जाता है, पर वाणी का घाव कभी नहीं भरता'। इसलिए कबीरदास ने कहा कि :

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोए।
औरन को शीतल करै, आपहुँ शीतल होए।।

18. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

यह पूर्णत: सत्य है कि लगातार अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी बुद्धिमान बन सकता है। अभ्यास के द्वारा ही मनुष्य अपनी क्षमताओं का विकास करके निपुण बन सकता है। अभ्यास के अभाव में तो वह अपने अर्जित ज्ञान एवं कौशल को भी भूल जाता है। संसार में सभी प्राणी जन्म से बुद्धिमान नहीं होते। कुछ में बुद्धि तो होती है, पर वह सुषुप्तावस्था में रहती है। अभ्यास करते रहने से वह बुद्धि सक्रिय हो जाती है। कलाएँ भी अभ्यास से ही निखरती हैं। वरदराज निपट मूर्ख था। वह कुएँ की जगत पर रस्सी से पड़े निशानों से प्रेरणा लेकर निरंतर अभ्यास में जुट गया और अभ्यास के बलबूते पर ही संस्कृत का महान विद्वान बन गया। कालिदास भी प्रारंभ में जड़बुद्धि थे, पर विदुषी पत्नी की फटकार सुनकर अभ्यास के बलबूते पर संस्कृत के महान कवि और नाटककार बन गए। वही विद्यार्थी सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता है, जो निरंतर पढ़ाई का अभ्यास करता रहता है। अभ्यास से मूर्ख व्यक्ति भी चतुर बन जाता है। नृत्य-संगीत के क्षेत्र में तो अभ्यास का और अधिक महत्व है। अभ्यास ही कलाकार को अपने क्षेत्र में पारंगत बनाता है। अत: हम कह सकते हैं कि 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान'।

19. छात्र स्वयं करें।

20. वह अविस्मरणीय यात्रा

सर्दियों का मौसम था और हम ट्रेन से मसूरी जा रहे थे। शायद हमें बर्फ़ गिरती हुई देखने को मिल जाए–यह उत्सुकता हमारे मन में थी। हम देर रात तक तरह-तरह के खेल खेलते रहे और फिर सो गए। जैसे ही सोए गाड़ी एक झटके से रुक गई। जो नीचे की बर्थ पर थे, वे लुढ़ककर नीचे गिर गए। ऊपर की बर्थ वालों को भी हलकी चोट आई। पता लगा कि किसी ने अचानक चेन खींच दी थी। कोई चोर था जो एक बैग चुराकर भाग रहा था। लगभग 15-20 मिनट रुककर गाड़ी फिर आगे बढ़ी। अब तो हमारी नींद गायब हो चुकी थी। सुबह हम देहरादून स्टेशन पर उतरे और वहाँ से बस से मसूरी के लिए रवाना हुए। पता लगा कि रात से बर्फ़ गिर रही है और रास्ता कभी भी बंद हो सकता है। हम आधे रास्ते पहुँच गए थे। बस रुक गई, पता लगा कि एक पत्थर लुढ़ककर सड़क पर आ गया है। साथ ही बर्फ़बारी होने के कारण रास्ता बिल्कुल बंद हो गया है। कोई उपाय न था। एक पूरा दिन हमने यात्री बस में बिताया। बर्फ़ गिरती देखी तो सही मगर हम उसका आनंद न उठा पाए। जब तक मसूरी पहुँचे इतना परेशान हो गए थे कि सोचा अब आनंद उठाने के चक्कर में फिर कभी इतनी परेशानी मोल न लेंगे। दो दिन वहाँ बिछी हुई बर्फ़ पर हम घूमते रहे और कभी न भुला सकने वाली यात्रा की याद को अपने मन में लेकर घर वापस लौट आए।

21. दूरदर्शन

दूरदर्शन का शाब्दिक अर्थ है–दूर की वस्तु को देखना। टेलीविजन रेडियो का ही विकसित रूप है। टेलीविजन का आविष्कार 1926 ई॰ में स्कॉटलैंड के वैज्ञानिक जे॰एल॰ बेयर्ड ने किया था। भारत में अक्टूबर 1959 में दूरदर्शन प्रारंभ हुआ। सबसे पहले केवल श्वेत-श्याम (ब्लैक एंड व्हाइट) टी॰वी॰ ही हुआ करते थे। दुनिया भर के लोग सायंकाल से देर रात तक टी॰वी॰ के कार्यक्रमों का आनंद उठाते हैं। आज रंगीन व केबल टी॰वी॰ का युग है। दर्शकों के लिए सैकड़ों चैनल उपलब्ध हैं। ताजातरीन समाचार हों, गीत-संगीत हो, भजन-कीर्तन हो या योग और ज्योतिष संबंधी कार्यक्रम हो–हर भाषा में मनोरंजक और शिक्षाप्रद कार्यक्रमों की होड़ लगी हुई है। घर बैठे सभी कुछ देखने की सुविधा! रिमोट द्वारा तो टी॰वी॰ को दूर से बैठे-बैठे ही संचालित कर सकते हैं। दूरदर्शन हर उम्र, हर वर्ग, हर स्तर की रुचि के कार्यक्रम लेकर चौबीस घंटे हमारी सेवा में उपस्थित है। छात्र, शिक्षक, डॉक्टर, वैज्ञानिक, कृषक, मज़दूर, उद्योगपति, व्यापारी और गृहिणी सभी इससे लाभ उठा सकते हैं। किंतु विज्ञान के इस अनमोल उपहार ने हमारा नुकसान भी किया है। बच्चों और बड़ों की गतिविधियाँ कमरे तक सीमित हो गई हैं। सभी हर समय टी॰वी॰ से चिपके रहना चाहते हैं जिससे न केवल समय की हानि होती है, बल्कि स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता है। टी॰वी॰ के सभी प्रोग्राम बच्चों के देखने के योग्य नहीं होते, बच्चों के कोमल मन और मस्तिष्क पर इनका दुष्प्रभाव पड़ता है। दूरदर्शन का दर्शन हमें दूर से बैठकर करना चाहिए, क्योंकि पास टी॰वी॰ देखना आँखों को नुकसान पहुँचाता है।

22. राष्ट्रीय ध्वज

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र का अपना एक ध्वज होता है। यह एक स्वतंत्र देश होने का संकेत है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज की अभिकल्पना पिंगली वैंकेयानंद ने की थी और इसे इसके वर्तमान स्वरूप में 22 जुलाई, 1947 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक के दौरान अपनाया गया था। यह 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेज़ों से भारत की स्वतंत्रता के कुछ ही दिन पूर्व की गई थी। इसे 15 अगस्त, 1947 और 26 जनवरी, 1950 के बीच भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया गया और इसके पश्चात भारतीय गणतंत्र ने इसे अपनाया। भारत में 'तिरंगे' का अर्थ भारतीय राष्ट्रीय ध्वज है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में तीन रंग की क्षैतिज पट्टियाँ हैं, सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफ़ेद और नीचे गहरे हरे रंग की पट्टी और ये तीनों समानुपात में हैं। हमारे राष्ट्रीय ध्वज के तीनों रंग प्रतीकात्मक हैं। केसरिया रंग त्याग और वीरता का प्रतीक है। यह हमारे त्याग और शौर्य की गाथा गाता है। झंडे के मध्य सफ़ेद रंग शांति का प्रतीक है। हमारा देश संसार में शांति व भाईचारे का संदेश फैलाना चाहता है। झंडे का हरा रंग भारत की हरियाली और खुशहाली का प्रतीक है। ध्वज की चौड़ाई का अनुपात इसकी लंबाई के साथ 2 और 3 का है। सफ़ेद पट्टी के मध्य में गहरे नीले रंग का एक चक्र है। यह चक्र अशोक की राजधानी के सारनाथ के शेर के स्तंभ पर बना हुआ है। इसका व्यास लगभग सफ़ेद पट्टी की चौड़ाई के बराबर होता है और इसमें 24 तीलियाँ हैं। यह चक्र भारत की प्रगति तथा लोकतंत्र का प्रतीक है। हमारा राष्ट्रीय ध्वज देश की विचारधारा के अनुसार ही बनाया गया है। सभी राष्ट्रीय पर्वों पर देश के प्रत्येक भाग में झंडारोहण किया जाता है। देश में जब कभी राष्ट्रीय शोक होता है तब झंडे झुका दिए जाते हैं। हम सब राष्ट्रीय झंडे का सम्मान करते हैं।

23. भारत की शान : दिल्ली मेट्रो

दिल्ली मेट्रो यह शहर के चारों ओर सफ़र करने का बहुत अच्छा तरीका है। दिल्ली बहुत भीड़ वाली जगह है। जिसके कारण दिल्ली के सड़कों पर बहुत भीड़ लगी रहती थी। दिल्ली मेट्रो यह प्रदूषण द्वारा जानलेवा दुर्घटना और यातायात की स्थिति को कम करने के लिए सरकार ने भारत की राजधानी दिल्ली में मेट्रो रेल चलाने का कार्य शुरू कर दिया। दिल्ली मेट्रो यहाँ के लोगों के लिए किसी सपने से कम नहीं थी। हमारे देश में दिल्ली मेट्रो की शुरुआत 24 दिसंबर, 2002 को हुई थी। दिल्ली मेट्रो का पहला रूट उत्तरी दिल्ली के शाहदरा से तीसहजारी तक का था। पूरे संसारभर के देश; जैसे–जापान, जर्मनी, फ्रांस, सिंगापुर, अमेरिका इन देशों में मेट्रो की शुरुआत पहले से हो चुकी थी। दिल्ली मेट्रो के अंदर जाने और बाहर आने के लिए माइक्रोप्रोसेसर के नियंत्रित दरवाज़े लगे हुए हैं। इसके कोच अत्याधुनिक तकनीक और वातानुकूलित हैं। टिकट वितरण प्रणाली भी स्वचालित है। दिल्ली मेट्रो का सफ़र करने वाले यात्रियों के सुविधा के लिए मेट्रो स्टेशन के परिसर में एस्केलेटर संस्थापित किए गए हैं।

मेट्रो का प्रयोग दिव्यांग लोग भी बहुत आसानी से कर सकते हैं। मेट्रो रेल ने लोगों की ज़िंदगी को गति प्रदान की है और दिल्ली में ट्रैफिक जाम होने से बचाया है। दिल्ली मेट्रो से हर दिन लाखों लोग सफ़र करते हैं। इसके शुरू होने पर लाखों लोगों की यातायात संबधी परेशानी समाप्त हो गई है। जिन लोगों को अपना सफ़र करने के लिए तीन घंटों का समय लगता था। लेकिन आज मेट्रो के आ जाने से यह सफर 40 से 50 मिनटों में तय होने लगा है। यह मेट्रो हर एक स्टेशन पर 20 सेकंड्स के लिए रुकती है। कोई भी व्यक्ति दिल्ली से दूसरे स्थान पर बहुत कम कीमत और कम समय में सफ़र कर सकता है। इसका मुख्य उद्देश्य यातायात को नियंत्रित करना था। दिल्ली सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला शहर है। इस शहर में मानव जीवन बहुत व्यस्त है। साथ ही लोगों को प्रदूषण की समस्या का सामना करना पड़ता है। हर दिन सड़कों पर वाहनों की और बस में भीड़ होती है। जिसकी वजह से लोगों को मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। लेकिन आज मेट्रो रेल आने के कारण लोगों के जीवन में थोड़ा सुकून आया है। दिल्ली मेट्रो यहाँ के लोगों के लिए वरदान साबित हुई है। इस मेट्रो रेल को राजधानी की शान कहा जाता है। इसे साफ़-सुथरा रखना सरकार के साथ-साथ हम सभी का कर्तव्य है।

24. आँखों देखी दुर्घटना

वैसे तो दुनिया में हर एक पल में बहुत सारी दुर्घटनाएँ होती हैं, पर एक ऐसी दुर्घटना है जो मैंने खुद अपनी आँखों से देखी है और उस दुर्घटना ने मेरी ज़िंदगी में बहुत असर डाला है। एक बार मैं अपने परिवार के साथ रात को किसी विवाह समारोह से वापस घर आ रहा था और गाड़ी मेरे पापा चला रहे थे। हम बहुत साधारण रफ़्तार से जा रहे थे की एक लाल रंग की गाड़ी बहुत तेज़ी से हमें पीछे छोड़ आगे निकल गई और देखते-ही-देखते आँखों से ओझल हो गई क्योंकि उसकी रफ़्तार बहुत तेज़ थी। मेरे पिता जी कहने लग गए की ऐसे लोग खुद तो दुर्घटना का शिकार होते ही हैं और साथ में दूसरों को भी नुकसान पहुँचाते हैं। हम बातें करते थोड़ा आगे बढ़े ही थे कि देखा वही गाड़ी दूसरी गाड़ी से टकरा गई। यह टक्कर इतनी जोरदार थी कि लग रहा था जैसे कोई बम फटा हो। थोड़ा समय तो समझ में ही नहीं आया की हुआ क्या है और आस-पास बहुत धुआँ भी हो गया था। हमने गाड़ी रोक ली और मदद के लिए गाड़ी से उतरे, हमें देख और लोग भी वहाँ आ गए। वह लाल रंग की गाड़ी एक 21-22 साल का लड़का चला रहा था जो की मौके पर ही अपने प्राण गवाँ चुका था। वह जिस गाड़ी से टकराया था उस गाड़ी में सवार परिवार को भी गंभीर चोटें लगी थीं, जिन्हें एंबुलेंस से तुरंत नजदीक के अस्पताल पहुँचाया गया। उस दिन के बाद से पापा बहुत सावधानीपूर्वक और धीरे गाड़ी चलाते हैं और दूसरों को भी यही सलाह देते हैं।

25. छात्र स्वयं करें।

26. मोबाइल फ़ोन का युग

विज्ञान की अद्भुत एवं चमत्कारिक देन है—मोबाइल फ़ोन। वर्तमान में मोबाइल की लोकप्रियता बहुत अधिक है। छोटे बच्चे से लेकर बड़े-बुजुर्ग के हाथों में मोबाइल फ़ोन देखा जा सकता है। यह संपर्क का सुलभ साधन है, इसने विश्व की दूरियाँ घटा दी हैं। अब हम कभी भी, कहीं भी, किसी से भी बात कर सकते हैं। मोबाइल फ़ोन एक ऐसा वरदान है जो 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' है। आज मोबाइल एक मित्र की भाँति हमारे साथ रहता है और कभी अकेलापन महसूस नहीं होने देता। मोबाइल पर केवल बात करने की ही सुविधा नहीं, बल्कि अन्य कई सुविधाएँ प्राप्त हैं। भिन्न-भिन्न गेम, समाचार, चुटकुले, कैलेंडर, अलार्म, फ़ोन बुक, संदेश भेजने आदि की सुविधा मोबाइल पर उपलब्ध है। मोबाइल फ़ोन का सर्वाधिक लाभ काम की तलाश करने वाले लोग उठा रहे हैं। श्रमिक, कुशल और अर्धकुशल कारीगरों को इसकी मदद से काम मिलना सरल हो गया है। दफ़्तर का काफ़ी काम भी मोबाइल फ़ोन से ही निपटा दिया जाता है। यह एस०एम०एस० (सरल संदेश सेवा) का सबसे सस्ता साधन है। इसके माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेना आसान हो गया है। सभी बिलों का भुगतान करना सरल हो गया है। ई-मेल की सुविधा प्राप्त हो गई है। लेकिन हर चीज़ की अति बुरी होती है, लोग इसका दुरुपयोग भी करने लगे हैं। कुछ लोग इसके इस कदर आदी हो गए हैं कि वे अपना ज़रूरी काम-धाम छोड़कर हमेशा इसमें ही व्यस्त रहते हैं। लोग कार चलाते समय भी इसका बहुत प्रयोग करते हैं, जिससे दुर्घटना का भय बना रहता है। विद्यार्थी भी मोबाइल पर घंटों-घंटों समय बर्बाद करने लगे हैं। आप किसी कार्य में मग्न हैं या गहन अध्ययन में हैं तो इसकी घंटी ध्यान भंग करती है। इसलिए हर चीज़ की एक सीमा होनी चाहिए। मोबाइल का प्रयोग सोच-समझकर अच्छी जानकारी के लिए करना चाहिए। तभी यह वरदान सिद्ध होगा।

27. छात्र स्वयं करें।

28. स्वच्छ भारत : स्वस्थ भारत

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सपनों को साकार करते हुए हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान गत कई वर्षों से चलाया हुआ है। अब इस दिशा में तेज़ी से काम हो रहा है। स्वच्छता कार्यक्रम के अंतर्गत खुले में शौच करने पर रोक लगाई जा रही है। अधिकांश गाँवों में शौचालय बनाए जा चुके हैं, शेष में बनाए जा रहे हैं। स्कूलों में भी शौचालयों की व्यवस्था अंतिम चरण में है। इस स्वच्छता का संबंध हमारे स्वास्थ्य से है। यदि हम स्वच्छता के नियमों का पालन करेंगे तो हमारा जीवन स्वस्थ बनेगा। जहाँ गंदगी होगी, वहाँ बीमारी होगी। स्वस्थ भारत के निर्माण के लिए स्वच्छता को जीवन का अनिवार्य अंग बनाना होगा। इस दिशा में अब पर्याप्त चेतना भी आई है। प्राय: देखा जाता है कि हम अपना घर तो साफ़ रखते हैं, पर घर के बाहर गली-सड़क पर गंदगी फैला देते हैं। यह आदत बहुत बुरी है। हमें अपने आसपास के वातावरण को भी स्वच्छ रखना होगा। स्वच्छ रहकर इसे बचाया जा सकता है। हमें स्वच्छता का पालन सभी स्तरों पर करना होगा। अपने शरीर की सफ़ाई, अपने वस्त्रों की सफ़ाई, पीने के पानी का साफ़ होना, खाने से पहले हाथों को साबुन से धोना—ऐसे कुछ सामान्य नियम हैं, जिनसे हम स्वच्छ और स्वस्थ रह सकते हैं। विदेशों की स्वच्छता की तो सभी प्रशंसा करते हैं, पर हम अपने देश में आते ही इसके प्रति लापरवाह हो जाते हैं। इसे सरकारी अभियान न मानकर अपना अभियान मानना चाहिए। हमें भारत को स्वच्छ बनाकर विश्व में इसकी छवि को सुधारना है। भारत गाँवों का देश है। वहाँ गंदगी अधिक है। इसे दूर करना है। लोगों में जनचेतना जगानी होगी, तभी 'स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत' का संकल्प पूरा हो सकेगा। हमारे दृढ़-निश्चय से यह अवश्य पूरा होकर रहेगा।

29. छात्र स्वयं करें।

30. आतंकवाद : भयंकर समस्या

भारत में आतंकवाद की शुरुआत बंगाल में नक्सलवादियों द्वारा आरंभ की गई। इसको आगे बढ़ाने का काम पंजाब में खालिस्तान बनाने की माँग से हुआ। जिसके परिणामस्वरूप असंख्य बेगुनाहों की जान गई थी। आज स्थिति यह है कि इसका स्वरूप इतना विकृत हो चुका है कि धीरे-धीरे समूचा भारत इसका शिकार हो गया है। जन-जन में आज भय समाहित है। देश की स्थिति यह है कि देश के लोग ही इसे खोखला करने में लीन हैं। बेरोज़गारी से बचने के लिए धार्मिक-युद्ध (जेहाद) का मुखौटा ओढ़कर आतंकवाद में कदम रखने वाले युवा देश में अशांति और अस्थिरता का माहौल फैलाकर अपनी जीत समझ बैठे हैं। अत्यधिक आबादी भी आतंकवाद का जन्मदाता है जितनी आबादी उतनी ही बेरोज़गारी और उतनी ही जीवन जीने की मुश्किलें। आतंकवाद को खत्म करने के लिए देश में कई कानून भी बनाए गए हैं, लेकिन सरकार को उसके लिए और भी सख्त कदम उठाने की जरूरत है।

31. लोकतंत्र और चुनाव

भारत में 18 वर्ष और उससे ऊपर की आयु वाले प्रत्येक युवा को मतदान का अधिकार दिया गया है। वे चुनाव में अपना वोट डालकर अपनी इच्छा के अनुसार सरकार का चयन कर सकते हैं। भारत की जनसंख्या का 65 प्रतिशत भाग युवा हैं। इस युवा वर्ग को देश की शासन-व्यवस्था में भागीदार बनाने के लिए मताधिकार मिलना ज़रूरी था। इसके बिना लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता था। लोकतंत्र में मत देने का अधिकार सबसे बड़ा हथियार है। युवावर्ग मताधिकार के बलबूते पर सरकार बदलने में सक्षम है और उसने अभी हाल के वर्षों में आम चुनावों में ऐसा करके दिखाया भी है। मतदान के प्रति युवाओं में जागरूकता का होना बहुत ज़रूरी है। जागरूक मतदाता ही अपने वोट का सही प्रयोग करना जानते हैं। उन्हें अपने मतदान की अहमियत पता होती है। ऐसे में युवाओं को और अधिक जागरूक बनाने के लिए सघन अभियान चलाया जाना चाहिए। अधिक-से-अधिक युवाओं को मतदान करने के लिए जाना चाहिए। इसके साथ उनका अपना भविष्य भी जुड़ा हुआ होता है। इसके लिए सर्वप्रथम युवाओं को अपना नाम मतदाता सूची में जुड़वाना होगा तथा मत देने के लिए अवश्य जाना होगा।

32. छात्र स्वयं करें।

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें।

2. कोरोना वायरस

कोरोना वायरस दुनियाभर में तेज़ी से फैल रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोरोना के संक्रमण को महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस है। कोरोना वायरस (सीओवी) का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। डब्लू॰एच॰ओ॰ के मुताबिक बुखार, खाँसी, साँस लेने में तकलीफ़ इसके लक्षण हैं। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। यह वायरस दिसंबर 2019 में सबसे पहले चीन में पकड़ में आया था। इसके बाद यह विश्व के दूसरे देशों में भी तेज़ी से फैल गया। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी बरतने की ज़रूरत है ताकि इसे फैलने से रोका जा सके। कोविड-19/कोरोना वायरस में पहले बुखार होता है। इसके बाद सूखी खाँसी होती है और फिर एक हफ्ते उबाद साँस लेने में परेशानी होने लगती है। इन लक्षणों का हमेशा मतलब यह नहीं है कि अमूक व्यक्ति को कोरोना वायरस का संक्रमण है। कोरोना वायरस के गंभीर मामलों में निमोनिया, साँस लेने में बहुत ज़्यादा परेशानी, किडनी फेल होना और यहाँ तक कि मौत भी हो सकती है। बुजुर्ग या जिन लोगों को पहले से अस्थमा, मधुमेह या हार्ट की बीमारी है, उनके मामले में खतरा गंभीर हो सकता है। जुकाम और फ्लू के वायरसों में भी इसी तरह के लक्षण पाए जाते हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए ये दिशा-निर्देश जारी किए हैं—सदैव बाहर से आने के बाद अपने हाथों को साबुन से 20-30 सेकंड तक अवश्य धोएँ।, अपने हाथों को अपने मुँह से दूर ही रखें, जिससे कि संक्रमण होने पर भी आपके अंदर न जा पाए। लोगों से पाँच-छह फीट की दूरी सदैव बनाए रखें। जरूरी न हो तो बाहर न जाएँ। सार्वजनिक स्थानों पर जाने से बचें। सदैव मास्क और ग्लब्स पहनें। संक्रमण की स्थिति में खुद को दूसरों से अलग कर लें और नजदीकी अस्पताल को सूचित करें। पूरी दुनिया में करोड़ों लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हैं। इसका असर आर्थिक गतिविधियों पर भी पड़ा है। कोरोना वायरस जैसे वायरस शरीर के बाहर बहुत ज़्यादा समय तक ज़िंदा नहीं रह सकते। कोरोना से बचाव करने में ही समझदारी है क्योंकि यह एक संक्रामक रोग है।

3. जंक फ़ूड

'जंक फूड' उस भोज्य-सामग्री को कहा जाता है, जिसमें अधिक मात्रा में खराब पोषण वाली चीज़ें; जैसे—वसा, चीनी, सोडियम के रसायन आदि पाए जाते हैं। आमतौर पर जंक फूड को स्वादिष्ट एवं आकर्षित बनाने के लिए उसमें कई खाद्य-पदार्थों और रंगों को डाला जाता है, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। संपूर्ण विश्व में दिनोंदिन जंक फूड का चलन बढ़ता जा रहा है। बाज़ार में मिलने वाली अधिकतर चीज़ें जंक फूड की सूची में शामिल होती हैं। जिन खाने की चीज़ों के लिए बच्चे ज़िद करते हैं, उनमें से ज़्यादातर चीज़ें जंक फूड की श्रेणी में आते हैं। इसकी सूची में हैं—बर्गर, फ्रेंच फ्राइस, कोका कोला, चिप्स, पीज्ज़ा, केक, हॉट डॉक, डोनट्स, पैनकेक्स इत्यदि। निरंतर इन पदार्थों का सेवन करने से बढ़ते वजन, मोटापा की समस्या, हृदयरोग, मधुमेह आदि के हम शिकार हो जाते हैं। स्वस्थ जीवन के लिए इन जंक फूड के सेवन से बचना होगा और हमें इसके प्रति सचेत होना पड़ेगा। जो भोजन हमारी संस्कृति से नहीं आई, वह भोजन हमारे लिए कैसे हितकर हो सकता है। पाश्चात्य संस्कृति को अपनाते-अपनाते आज हमारी वस्तु-स्थिति न भारतीय रही न ही विदेशी। यह विषय विचारणीय है। सर्वप्रथम जंक फूड के सेवन से हमें बचना होगा तभी हम और हमारा समाज स्वास्थ रह सकता है।

2. पत्र-लेखन

1. 20, टोक्यो

जापान

01 अगस्त, 20XX

प्रिय तनुज
सप्रेम नमस्कार!

मैं यहाँ पर सकुशल रहते हुए ईश्वर से तुम्हारी कुशलता की कामना करता हूँ। तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरे बड़े भाई रजत का विवाह 16.12.20XX को होना निश्चित हुआ है।

इस शुभ अवसर पर तुम्हें अपने माता-पिता और भाई के साथ अवश्य ही उपस्थित होना है। मैंने अन्य मित्रों को भी निमंत्रण भेजा है। हम सब मित्र साथ होंगे तो विवाह का आनंद दोगुना हो जाएगा। तुम अभी से विवाह की तैयारियाँ प्रारंभ कर देना। जैसे ही विवाह के कार्ड छप जाएँगे, मैं तुम्हें कार्ड भेज दूँगा। अपने आने की सूचना अवश्य भेज देना ताकि मैं तुम्हें लेने एयरपोर्ट पहुँच सकूँ।

चाचा जी एवं चाची जी को मेरा नमस्ते एवं प्रांजल को प्यार।

तुम्हारा मित्र

अ०ब०स०

2. छात्र स्वयं करें

3. परीक्षा भवन

क०ख०ग० स्कूल

शास्त्री नगर।

25 जून, 20XX

आदरणीय माता जी

चरणस्पर्श!

अभी-अभी आपका पत्र मिला, पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि अब आपका स्वास्थ्य पहले से बहुत अच्छा है। मेरी ईश्वर से कामना है कि आप जीवन भर स्वस्थ रहें।

आपने मेरे विद्यालय और छात्रावास के विषय में पूछा है। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मेरा नया विद्यालय इस क्षेत्र में मुकुट के अनमोल रत्न के समान है। इस विद्यालय में प्रवेश पाने के लिए विद्यार्थी तरसते हैं। यहाँ का वार्षिक परीक्षाफल, सुंदर तथा प्रदूषण रहित वातावरण, सुयोग्य एवं परिश्रमी अध्यापक तथा मेधावी छात्र इस विद्यालय की अनमोल पूँजी हैं। जहाँ एक ओर इसका वार्षिक परीक्षा परिणाम हर वर्ष लगभग 100 प्रतिशत आता है, वहीं खेलों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा अन्य गतिविधियों में भी इस विद्यालय ने अपनी धाक जमा रखी है।

इस विद्यालय का लाल ईंटों से बना भवन अत्यंत सुंदर व आकर्षक है। लगभग 100 से भी अधिक कमरे आधुनिक डेस्कों एवं अन्य आवश्यक सामग्री से सुसज्जित हैं। चारों ओर छायादार वृक्ष तथा फूलों के सुंदर बगीचे हैं। यहाँ का सुंदर पुस्तकालय, प्रयोगशाला कक्ष और क्रीड़ाकक्ष इसकी शोभा में चार चाँद लगाते हैं। इस विद्यालय में लगभग 3500 छात्र हैं, जो आज्ञाकारी, मेधावी, परिश्रमी एवं सभ्य हैं।

यहाँ छात्रावास का माहौल भी बहुत अच्छा है। प्रात:काल की सैर तथा हलका व्यायाम करने के पश्चात स्नानादि से निवृत्त होने पर हमें नाश्ते में दूध दिया जाता है। छात्रावास के अधीक्षक महोदय नियमों के कठोर परंतु अत्यंत मृदुल स्वभाव के हैं। दोपहर तथा रात का भोजन पौष्टिक एवं स्वादिष्ट होता है। मुझे आशा है इस वर्ष मैं प्रथम श्रेणी प्राप्त कर लूँगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

अ॰ब॰स॰

4. परीक्षा भवन

क॰ख॰ग॰ स्कूल

नई दिल्ली

14 मार्च, 20XX

प्रिय अजीत

सप्रेम नमस्कार!

बहुत दिनों से तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया तथा न ही कोई अन्य सूचना मिली। इसलिए मैंने तुम्हारे बड़े भाई विनय से टेलीफ़ोन पर तुम्हारे विषय में पूछताछ की। उन्होंने बताया कि आजकल तुम मित्र-मंडली में मस्त रहते हो तथा माता-पिता की भी खोज-खबर नहीं लेते।

एक अन्य आश्चर्यजनक बात उन्होंने तुम्हारे बारे में सुनाई कि तुमने पान-पराग तथा चुटकी खाना शुरू कर दिया है। पहले तो मैंने इसे मज़ाक समझा, लेकिन उन्होंने गंभीर तथा चिंतित होकर इस व्यसन से दूर रहने के लिए मुझे तुमको परामर्श देने के लिए कहा, तो मुझे विश्वास करना ही पड़ा।

मित्र, तुम नहीं जानते कि तुमने कितना खतरनाक शौक एवं रोग पाल लिया है। आधुनिक तथा तथाकथित सभ्य कहे जाने वाले युवकों में खुशबूदार मसाले, सुपारी तथा चुटकी आदि खाने का शौक दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। इसके साथ ही उनमें जीभ, गाल तथा गले के कैंसर होने की संभावनाएँ भी बढ़ती जा रही हैं। ये एक प्रकार के मादक पदार्थ हैं, जो घटिया सामग्री से तैयार किए जाते हैं। इनका सेवन करने से स्मरणशक्ति कमज़ोर होती है तथा गले एवं दिल के रोग जन्म लेते हैं।

पिछले दिनों दैनिक जागरण में छपी एक रिपोर्ट के आधार पर भारत के लगभग 10 प्रतिशत नवयुवक जिह्वा तथा गले के रोगी हैं, जो इन्हीं पदार्थों की देन है। ऐसे पदार्थ खाने से बुद्धि का ह्रास होता है तथा गले के अनेक आंतरिक रोग पैदा होते हैं। दूसरी ओर, इन पदार्थों का सेवन करने वाले सभ्य, सुसंस्कृत एवं बुद्धिजीवी व्यक्तियों के लिए घृणा के पात्र भी बन जाते हैं। ऐसे व्यक्ति शौचालय, रेलवे-स्टेशनों, बाज़ार, सड़कों आदि पर थूक-थूककर वहाँ के सौंदर्य को नष्ट करते हैं, जिससे देश के सौंदर्य-बोध को क्षति पहुँचती है। अत: मेरा तुमसे यह अनुरोध है कि इन पदार्थों का सेवन बंद कर दो, नहीं तो भविष्य में ये तुम्हें कहीं का नहीं छोड़ेंगे।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

अ॰ब॰स॰

प्रश्न सं॰ 5, 6, 7 एवं 8 छात्र स्वयं करें।

9. परीक्षा भवन

अ॰ब॰स॰ स्कूल

नई दिल्ली

10 मार्च, 20XX

पूज्य पिता जी

सादर प्रणाम!

मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी वहाँ सानंद होंगे। मैं ईश्वर से परिवार की कुशलता की कामना करती हूँ। पिता जी, इस वर्ष मैं अपनी कक्षा में प्रथम आया हूँ। मेरे 90 प्रतिशत से अधिक अंक हैं। अंक-पत्र मिलते ही मैं आपको व्हाट्सअप कर दूँगी। पिछले पत्र के माध्यम से मैंने आपसे पर्वतारोहण संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त करने की अनुमति माँगी थी, पर वह अस्वीकृत हो गई थी।

पिता जी, मेरी ग्रीष्मावकाश की छुट्टियाँ शुरू होने वाली हैं। इन छुट्टियों का सदुपयोग मैं पर्वतारोहण सीखकर करना चाहता हूँ। मुझे यह प्रशिक्षण दार्जिलिंग स्थित सुप्रसिद्ध पर्वतारोहण प्रशिक्षण संस्थान द्वारा प्रदान किया जाएगा। यह प्रशिक्षण मेरी शारीरिक क्षमता तो बढ़ाएगा ही, साथ ही मुझे पर्वतीय सौंदर्य का दर्शन करने का अवसर भी मिल जाएगा। मुझे पर्वतीय जलवायु, वहाँ के रहन-सहन, संस्कृति, वहाँ के लोगों के श्रमपूर्ण जीवन से परिश्रम करने की प्रेरणा मिलेगी और टेढ़ी-मेढ़ी पतली सड़कें, बर्फ़ से ढकी चोटियाँ, प्रदूषणरहित वातावरण, फूलों की वादियाँ, कल-कल करते झरने आदि देखने का अनुभव प्राप्त होगा। मैं आपसे वादा करता हूँ कि इस प्रशिक्षण के लिए मैं आपसे किसी अतिरिक्त धनराशि की माँग नहीं करूँगा। आशा है कि इसके लिए आप मुझे सहर्ष अनुमति प्रदान करेंगे।

एक बार पुनः आपको और माता जी को सादर प्रणाम तथा वैष्णवी को प्यार। शेष सब ठीक है।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

क॰ख॰ग॰

प्रश्न सं॰ 10 एवं 11 छात्र स्वयं करें।

12. परीक्षा भवन

क॰ख॰ग॰ विद्यालय, नई दिल्ली

2 अप्रैल, 20XX

प्रधानाचार्य

अ॰ब॰स॰ विद्यालय

नई दिल्ली

विषय: खेलकूद के सामान की पूर्ति और प्रशिक्षकों की नियुक्ति हेतु अनुरोध

मान्यवर

सविनय निवेदन है कि मैं विद्यालय की खेल-परिषद का सदस्य होने के नाते आपका ध्यान खेलकूद संबंधी कुछ कठिनाइयों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

हमारा विद्यालय शैक्षिक दृष्टि से अपने क्षेत्र के सर्वोत्तम विद्यालयों में गिना जाता है। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड दिल्ली द्वारा आयोजित कक्षा दसवीं व बारहवीं के परीक्षा परिणाम इस बात के साक्षी हैं, परंतु अभी तक खेलकूद में हमारे विद्यालय की वह छवि उभरकर नहीं आई है। अंतरविद्यालयी तथा क्षेत्रीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में हमारा विद्यालय अन्य विद्यालयों से पीछे है।

हमारे विद्यालय में प्रतिभावान विद्यार्थियों की कमी नहीं है, परंतु अन्य विद्यालयों की भाँति विभिन्न खेलों के प्रशिक्षक नहीं होने के कारण, विद्यार्थी किसी भी खेल में विशेष स्थान प्राप्त करने में असमर्थ रह जाते हैं। विद्यालय का समय समाप्त होने के बाद अन्य विद्यालय अपने विद्यार्थियों को प्रशिक्षकों से विभिन्न खेलों का प्रशिक्षण दिलवाते हैं, परंतु हमारे विद्यालय में अभी तक प्रशिक्षण का कोई प्रबंध नहीं है।

पिछले कुछ वर्षों से खेलकूद के सामान की पूर्ति में भी कमी आई है। मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि कृपया खेलों का पर्याप्त सामान तुरंत मँगाया जाए तथा विशेष प्रशिक्षकों की नियुक्ति करके प्रतिभावान छात्रों को विशेष प्रशिक्षण दिलाया जाए। साथ ही खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को उचित प्रोत्साहन भी दिया जाए। यदि हो सके तो एक अतिरिक्त शारीरिक शिक्षा के शिक्षक की नियुक्ति भी की जाए।

मुझे विश्वास है कि आप इस दिशा में अवश्य ध्यान देंगे तथा खेलों के स्तर को बढ़ाने के लिए आवश्यक कदम उठाएँगे।

सधन्यवाद

भवदीय
अ॰ब॰स॰
कक्षा दसवीं 'अ',
अनुक्रमांक–22

प्रश्न सं॰ 13, 14, एवं 15 छात्र स्वयं करें।

16. एफ–15, स्वरूप नगर
नई दिल्ली–110045

06 जून, 20XX

प्रिय अनुज
शुभाशीर्वाद!
कल माता जी का पत्र प्राप्त हुआ जिससे ज्ञात हुआ कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा है। यह तो तुम भी जानते हो कि पढ़ाई में मन लगाने के लिए अच्छे स्वास्थ्य की आवश्यकता होती है। मेरा परामर्श है कि तुम प्रात:भ्रमण नियमित रूप से किया करो। प्रात:भ्रमण करना शरीर को स्वस्थ रखता है इससे हमें शुद्ध वायु मिलती है। एवं शरीर में हर समय स्फूर्ती बनी रहती है। प्रत्येक कार्य, जो तुम्हें करना आवश्यक है में मन लगता है तथा थकान भी महसूस नहीं होती। प्रात:भ्रमण का सबसे बड़ा लाभ यह है कि हम जल्दी–जल्दी बीमार नहीं पड़ते। इसके अलावा प्रात:भ्रमण से अनेक लाभ मिलते हैं। एक मास के निरंतर प्रात:भ्रमण से ही तुम्हें पर्याप्त लाभ दिखाई देगा। आशा है कि तुम तुरंत ही प्रात:भ्रमण शुरू कर दोगे। पत्र द्वारा इसके बारे में अवश्य बताना।
तुम्हारा अग्रज
अशोक

17. आवास विकास कॉलोनी
काशीपुर, उत्तराखंड

11 मई, 20XX

व्यवस्थापक
क॰ख॰ग॰ प्रकाशन
दरियागंज, नई दिल्ली

विषय : वी॰पी॰पी॰ द्वारा पुस्तकें भिजवाने का अनुरोध

महोदय
मुझे आपके पब्लिकेशन्स द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित पुस्तकों की आवश्यकता है। आपसे अनुरोध है कि मेरे अधोलिखित पते पर ये पुस्तकें शीघ्र वी॰पी॰पी॰ द्वारा भिजवाने का कष्ट करें। पुस्तकें भेजते समय कृपया देख लें कि पुस्तकें नवीनतम संस्करण की हों, कटी–फटी न हों, उनकी पैकिंग ठीक से की गई हो।

अग्रिम धनराशि के रूप में चार सौ रुपये का बैंक ड्राफ्ट भी पत्र के साथ संलग्न है। जिसका क्रमांक 7320..... है। वी॰पी॰पी॰ मिलते ही मैं शेष धनराशि का भुगतान कर दूँगा।

पुस्तकों की सूची	प्रतियाँ
1. हिंदी व्याकरण एवं रचना, कक्षा IX	एक प्रति
2. हिंदी व्याकरण एवं रचना, कक्षा X	एक प्रति

धन्यवाद
भवदीय
अ॰ब॰स॰

प्रश्न सं॰ 18 एवं 19 छात्र स्वयं करें।

20. परीक्षा भवन
क॰ख॰ग॰ स्कूल
नई दिल्ली

18 जुलाई, 20XX

आदरणीय भाई साहब
सादर प्रणाम!

अभी-अभी मुझे माता जी का पत्र मिला। इस पत्र में घर के समाचारों के अलावा एक अन्य महत्वपूर्ण समाचार यह है कि आपको आपकी मेहनत की वजह से आपको हमारे क्षेत्र की क्रिकेट की टीम का कप्तान चुना गया है। मैं यह समाचार पाकर बहुत खुश हूँ। मैं ईश्वर से प्रार्थना करूँगा कि आप लंबे समय तक कप्तान बने रहें एवं अपनी मेहनत एवं लगन से हमारे क्षेत्र का नाम रोशन करें। इस अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। मैंने इसका ज़िक्र अपने कुछ मित्रों से भी किया है। वे भी यह सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुए। भाई साहब, आपमें बहुत आत्मविश्वास है। मुझे आशा है कि आप हमारे क्षेत्र एवं देश का नाम अवश्य ही रोशन करेंगे।

एक बार पुन: बधाई स्वीकार करें। मेरी ओर से माता-पिता को चरणस्पर्श तथा टीना को प्यार कहना।

आपका अनुज
क॰ख॰ग॰

प्रश्न सं॰ 21 एवं 22 छात्र स्वयं करें।

23. स्वर्ण जयंति छात्रावास
मुखर्जी नगर, दिल्ली

12 मार्च, 20XX

पूज्य पिता जी
चरणस्पर्श!

पिता जी मैंने इस बार सत्रीय परीक्षा में दो विषयों में मेरे कम अंक आने के कारणों का विश्लेषण किया है। जो इस प्रकार है कि पिछले लगभग एक मास तक मैं क्षेत्रीय खेलों में अत्यधिक व्यस्त रहा, इसी कारण मैं पढ़ाई की ओर पूरा ध्यान नहीं दे पाया। खेलों पर इतना अधिक समय देना मेरी भूल थी। कक्षा में पढ़ाई गई विषय-सामग्री भी मुझसे छूट गई। खेलों की थकान ने मुझे अस्वस्थ कर दिया। पिछले एक-डेढ़ मास का समय ऐसे ही निकल गया। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि भविष्य में मैं अपना मुख्य ध्यान पढ़ाई पर ही केंद्रित रखूँगा। अगली परीक्षा में मैं अपनी पिछली कमी को पूरा कर दिखाऊँगा। आशा है कि आप मेरी बात का विश्वास करेंगे।

पूज्य माता जी को चरणस्पर्श तथा अनन्या को स्नेह कहना।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
सक्षम

प्रश्न सं॰ 24 छात्र स्वयं करें।

25. परीक्षा भवन
क॰ख॰ग॰ स्कूल
नई दिल्ली

20 मार्च, 20XX

आदरणीय पिता जी

चरणस्पर्श!

पिता जी मेरे विद्यालय में 15 मई से ग्रीष्मावकाश शुरू हो रहा है। पूज्य पिता जी इस बार हम लोगों का गरमियों में कहीं भी जाने का कोई कार्यक्रम नहीं है। आपको याद होगा कि पिछली बार हम सबने मिलकर मसूरी में कितने आनंद से छुट्टियाँ बिताई थीं। इस बार मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ। मैं इस बार यहीं रहकर कुछ अध्ययन करना चाहता हूँ।

आप तो जानते ही हैं कि समय बहुत कीमती है। गया हुआ वक्त लौटकर नहीं आता। मेरी राय है कि इन छुट्टियों में मैं मन लगाकर अपने पाठ्यक्रम की कुछ पुस्तकें पढ़ूँ, ताकि अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण हो सकूँ। छुट्टियों में हमें बहुत-सा समय खाली मिलेगा, इसीलिए मैंने अंग्रेज़ी तथा गणित का अभ्यास करने की योजना बना ली है। मैं अपना समय विभाजन करके सभी विषयों का विस्तारपूर्वक अध्ययन करूँगा। लिखने के काम पर विशेष ध्यान दूँगा। हिंदी और अंग्रेज़ी, दोनों भाषाओं में मेरी लिखाई ठीक होनी चाहिए। इन छुट्टियों में सैर करने और खेलने के लिए भी कुछ समय अवश्य निकालूँगा, ताकि मेरा स्वास्थ्य ठीक रहे। माता जी को मेरा प्रणाम तथा कनिका को मेरा प्यार।

आपका प्रिय पुत्र

अ०ब०स०

प्रश्न सं० 26 एवं 27 छात्र स्वयं करें।

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

सभी प्रश्न छात्र स्वयं करें।

3. विज्ञापन-लेखन

1.

धमाका

धमाका

कूलर एवं पंखों की दुनिया में क्रांति

तृषा

कूलर और पंखें

- सबसे तेज़ हवा
- आकर्षक रंग
- लुभावनी डिजाइन
- विभिन्न रंगों में उपलब्ध

कूलर जो करे
ए॰सी॰ का मुकाबला

तृषा कूलर लगाएँगे
तो ए॰सी॰ को भूल जाएँगे।

कम बिजली
खाए
पैसे बचाए।

आकर्षक दाम

इस महीने
खरीदने पर
15% छूट

संपर्क करें: क॰ख॰ग॰ इलेक्ट्रिकल्स

2.

सुहासिनी अगरबत्ती एवं धूप

"महक उठे ज़िंदगी"

शत-प्रतिशत प्राकृतिक एवं सुगंधित

मात्र : 20/- रुपये
100 gm

गुलाब, मोगरा, प्रीमियम चंदन, जस्मिन, केवड़ा आदि खुशबूओं में उपलब्ध।

निर्माता : विजय इंडस्ट्रीज, नई दिल्ली

ऑनलाइन भी उपलब्ध

संपर्क: 011-........, व्यापारिक पूछताछ आमंत्रित हैं।

3. छात्र स्वयं करें।

4.

सेल! सेल! सेल!

आ गया! आ गया! दीपावली का ऑफर आ गया!!

प्रांजल गारमेंट्स

20%

तक की छूट पाएँ

- कुर्ता-पायजामा
- टॉप-जीन्स
- स्कर्ट
- साड़ियाँ

शीघ्र आएँ तथा दीपावली के शुभ अवसर पर 20% छूट का लाभ अवश्य उठाएँ।

स्थान : राजौरी गार्डन, विशाल सिनेमा के सामने, नई दिल्ली

5. छात्र स्वयं करें।

6.

सिर्फ़ 50 रुपये में

केशिका हर्बल तेल

केशिका हर्बल तेल अपनाएँ।
सिरदर्द, बदनदर्द चुटकियों में दूर भगाएँ।

- शत-प्रतिशत आयुर्वेदिक
- स्मरणशक्ति बढ़ाने में असरदार
- बालों को काला, घना और लंबा बनाएँ

संपर्क करें : सी-2, आनंद विहार, नई दिल्ली मो॰ : 98......................

प्र॰ सं॰ 7, 8 एवं 9 छात्र स्वयं करें।

10. प्रगति मैदान में आयोजित 'व्यापार मेले' में आमंत्रण हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए।

व्यापार मेला

!!व्यापारियों के लिए खुशखबरी!!

विभिन्न प्रकार के व्यवसायों से संबंधित

व्यापार मेला

मेले में विभिन्न वस्तुओं पर विशेष छूट
महत्वपूर्ण तथा मनपसंद सामान को जल्द-से-जल्द
खरीदकर लाभ उठाएँ।

दिनांक: 11, 12, 13 अगस्त, 20XX

हॉल नं॰: 14–16, प्रगति मैदान, नई दिल्ली-110002

समय: सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक

अधिक जानकारी के लिए आज ही संपर्क करें– *94XXXXXXXX*

11.

स्वाद की दुनिया में एक नया नाम!

लाजवाब स्वाद

स्वाद जो यादों में बस जाए

अनुराधा मिष्ठान्न भंडार
की शुद्ध, ताजी मिठाइयाँ

शादी विवाह के लिए बुकिंग की व्यवस्था।

- ✓ शुद्ध परिवेश में तैयार
- ✓ कुशल कारीगरों द्वारा तैयार
- ✓ बाज़ार से कम दाम की गारंटी

मिठाई के साथ डिब्बे का वजन नहीं तोला जाता है

खुद खाएँ और दूसरों को भी खिलाएँ।

संपर्क करें– 011-2763...

12.

अपने बच्चों का भविष्य सुरक्षित बनाएँ
उन्हें उपहार में दें– एकदम नई पॉलिसी

बच्चों के सपने साकार
करें उच्च शिक्षा विदेश में
अध्ययन स्वरोजगार

तरुण अभिलाषा

कम प्रीमियम अधिक लाभ
आकर्षक बोनस

परिपक्वता अवधि के बाद लाखों
में भुगतान पाएँ

इस माह पॉलिसी लेने
पर प्रीमियम में पाएँ 2%
की विशेष छूट

हमसे आज ही मिलें
011-274................

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

1.

सोनम क्रीम
केवल दो हफ्तों में रंग-रूप निखारे

अब सोनम क्रीम
केवल 40 रुपये
में उपलब्ध

- दाग रहित चेहरे बनाए
- चेहरा लगे हर समय खिला-खिला
- सुंदरता बढ़ाए, आत्मविश्वास बढ़ाए

सोनम क्रीम के बड़े
पैक के साथ छोटा
पैक मुफ़्त

पूर्णतः आयुर्वेदिक एवं विश्वसनीय फेस क्रीम

2. **छात्र स्वयं करें।**

3.

प्रदूषण जानलेवा है

प्रतिवर्ष लाखों व्यक्ति होते हैं मृत्यु का शिकार
असंख्य होते हैं बीमार,
आप कीजिए गहन विचार
प्रदूषण से रहिए सावधान,
इसी में है समाज का कल्याण।

4. **विद्यार्थियों द्वारा निर्मित हस्तकला की वस्तुओं की प्रदर्शनी**

विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर सभी विद्यार्थियों से है आग्रह
खरीदें अपने ही विद्यालय के छात्र कलाकारों द्वारा निर्मित
हस्तकला के अनूठे नमूने तथा नवीन वस्तुएँ
अत्यंत आकर्षक तथा कम मूल्य पर।
इससे छात्र कलाकारों को मिलेगा विशेष प्रोत्साहन।

5. **अतिवृष्टि से प्रभावित लोगों की सहायतार्थ**

अतिवृष्टि के कारण केरल के कुछ शहर बाढ़ग्रस्त हो गए हैं। जिससे जान-माल दोनों की बहुत हानि हुई है। बाढ़ के कारण लोगों का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। जिसके कारण वहाँ के निवासी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भी तरस रहे हैं। अधिकाधिक संख्या में बाढ़ग्रस्त लोगों की सहायता के लिए स्वेच्छा से सहायता राशि व विभिन्न सामग्री दान देने की कृपा करें।

बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए दान देने के लिए इच्छुक व्यक्ति निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें–
98XXXXXX64, 98XXXXXX69

6. **'सफल' बॉल पेन**

- दिखने में सुंदर एवं किफ़ायती
- आकर्षक रंगों में उपलब्ध
- दे सुंदर लिखावट
- वॉटरफ्रूफ स्याही
- बिना रुके चलता ही जाए

अधिक जानकारी के संपर्क करें : 98XXXXXX34, 87XXXXXX98

7. **डेंगू में क्या करें और क्या न करें**

- हफ्ते में कम से कम एक बार कूलर का पानी बदलें तथा केरोसीन डालें ताकि उसमें मच्छर न पनपें।
- मच्छरों के काटने से बचने के लिए दिन के समय एयरोसोल का प्रयोग करें।
- ऐसे कपड़े न पहनें जिसमें भुजाएँ एवं टाँगे खुली हों।
- दिन के दौरान सोते समय मच्छर निरोधकों अथवा मच्छरदानी की प्रयोग करें।

8. **जैविक रसायन**

- साफ़-सफ़ाई में आए काम
- जहरीले रसायनों की अपेक्षा सुरक्षित
- खुशबूदार
- कीटाणुओं का काम-तमाम

मात्र ₹50/-

प्राप्ति के लिए संपर्क करें : 98XXXXXX08

प्र॰सं॰ 9 एवं 10 छात्र स्वयं करें।

4. संदेश-लेखन

1. (क)

संदेश

प्रातः 6 बजे

20.12.20xx

न कार्ड भेज रहा हूँ, न कोई फूल भेज रहा हूँ। सिर्फ़ सच्चे दिल से मैं आपको, क्रिसमस की शुभकामनाएँ भेज रहा हूँ।

अतुल

(ख)

संदेश

अपराह्न 2 बजे

03.10.20xx

लक्ष्मी जी विराजें आपके द्वार, सोने चाँदी से भर जाए आपका घर-बार।

जीवन में आएँ खुशियाँ अपार, शुभकामनाएँ हमारी करें स्वीकार।

राहुल

(ग)

संदेश

प्रातः 8 बजे

24.03.20xx

आपके और आपके परिवार को होली की खूब सारी शुभकामनाएँ, इसी दुआ के साथ आपके व आपके परिवार के साथ सभी के लिए सुखदायक, मंगलकारी व आनंददायक हो। होली की ढेर सारी शुभकामनाएँ।

अशोक सिंघल

(घ)

संदेश

प्रातः 6 बजे

11.09.20xx

ओणम का यह त्योहार आपके लिए सुख-समृद्धि और ऐश्वर्य लेकर आए...

ओणम 20xx की हार्दिक शुभकामनाएँ

रक्षिता

(ङ)

संदेश

प्रातः 7 बजे

14.08.20XX

रक्षाबंधन का त्योहार है, हर तरफ खुशियों की बौछार है।

बँधा एक धागे में भाई-बहन का प्यार है।।

शुभ रक्षाबंधन

पूजा गर्ग

(च)

संदेश

प्रातः 6 बजे

20.03.20XX

ईद खुशी मनाने और दिल की गहराइयों से हँसने का दिन है। हमारे ऊपर अल्लाह की रहमतों के आभारी होने का दिन है। खुदा करे ये ईद आपके लिए खास हो और बहुत सारे खुशी के पल हमेशा के लिए आए।

ईद की मुबारकबाद!

अबरार

2. (क)

संदेश

प्रातः 7.00 बजे

14 सितंबर, 20XX

सुमित

हमारी एकता और अखंडता ही हमारे देश की पहचान है। हम हैं हिंदुस्तानी और हिंदी हमारी ज़बान है। हिंदी हमारी आन-बान-शान है। हमें अपनी भाषा पर अभिमान है। 'हिंदी दिवस' पर मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। जय हिंद, जय हिंदी।

अखिल गुप्ता

(ख) छात्र स्वयं करें। (ग) छात्र स्वयं करें। (घ) छात्र स्वयं करें। (ङ) छात्र स्वयं करें। (च) छात्र स्वयं करें।

(छ)

संदेश

प्रातः 6.00 बजे

5 सितंबर, 20XX

आदरणीय अध्यापिका जी

जो बनाए हमें इंसान और दे सही-गलत की पहचान, देश के उन निर्माताओं को हम करें शत-शत प्रणाम। आप मेरे जीवन की प्रेरणा हैं, गाइड हैं, आप ही मेरे प्रकाश-स्तंभ हैं। मैं मन की गहराइयों से आपका आभारी हूँ। 'शिक्षक-दिवस' की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भूमिका चावला

(ज) छात्र स्वयं करें। (झ) छात्र स्वयं करें। (ञ) छात्र स्वयं करें।

3. (क)

संदेश

पूर्वाह्न 10.30 बजे

22-06-20XX

मामा जी नमस्कार

मामा जी आपको आपकी सालगिरह पर बहुत-बहुत बधाई। ईश्वर आपको दीर्घायु एवं सदा सुखमय बनाए रखे। आपको हमेशा इतनी खुशियाँ मिलें कि हमेशा अपनी मुसकराहटों से आपके घर का आँगन चहकता रहे।

पुनः बधाई।

दीपेश भदौरिया

(ख) छात्र स्वयं करें।

(ग) छात्र स्वयं करें।

(घ) छात्र स्वयं करें।

(ङ) छात्र स्वयं करें।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–1

1. गद्यांश–I

(क) iii	(ख) iv	(ग) iii	(घ) iv	(ङ) ii

गद्यांश–II

(क) ii	(ख) ii	(ग) ii	(घ) i	(ङ) iii

2. पद्यांश–I

(क) i	(ख) ii	(ग) i	(घ) ii	(ङ) iv

पद्यांश–II

	(क) iii	(ख) i	(ग) iii	(घ) ii	(ङ) iii
3.	(क) ii	(ख) ii	(ग) ii	(घ) i	(ङ) i
4.	(क) ii	(ख) i	(ग) i	(घ) i	(ङ) iii
5.	(क) ii	(ख) i	(ग) ii	(घ) i	(ङ) iii
6.	(क) i	(ख) iii	(ग)	(घ) i	(ङ) iii

7. (क) भारत का मंगल मिशन

अंतरिक्ष में चमकते तारे, ग्रह तथा अन्य पिंड सदियों से मनुष्य को आकर्षित करते रहे हैं। भारत में अंतरिक्ष अभियान चलाने का श्रेय 'इसरो' को जाता है। इसकी स्थापना 1969 ई॰ में हुई थी। 19 अप्रैल, 1975 को पहला स्वदेश निर्मित उपग्रह 'आर्यभट्ट' छोड़ा गया। तब से चली यह यात्रा 24 सितंबर, 2014 को मंगल ग्रह तक पहुँच चुकी है। मंगलयान का प्रक्षेपण 5 नवंबर, 2013 को हुआ था। इसके 45 मिनट बाद मंगलयान पृथ्वी की निर्धारित कक्षा में पहुँच गया था। प्रक्षेपण के बाद 25 दिन तक यह पृथ्वी के चक्कर लगाता रहा। इसे मंगलयान की ओर बूस्टर रॉकेट के सहारे भेजा गया था। 300 दिन की यात्रा तय करके 24 सितंबर, 2014 को यह मंगलयान सफलतापूर्वक मंगल ग्रह की निर्धारित कक्षा में पहुँच गया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के एक हज़ार से ज़्यादा वैज्ञानिक इस अभियान से जुड़े थे। भारत के यान ने प्रात: 7:55 पर मंगल ग्रह की कक्षा में प्रवेश किया। इस अभियान को मॉम (Mars Orbiter Mission) नाम दिया गया। इसके निर्माण में पूरी तरह से स्वदेशी तकनीक का प्रयोग किया गया था। इस मिशन पर सिर्फ़ 450 करोड़ रुपये खर्च हुए यानी 7 रुपये प्रति कि॰मी॰। इस मॉम का उद्देश्य अंतरिक्ष यान को लाल ग्रह की कक्षा में पहुँचाना था। इसके द्वारा वहाँ के वातावरण में लवण, मीथेन गैस आदि की उपस्थिति का पता लगाना था। मंगल एक अनोखा ग्रह है। यह सूर्य की ओर से चौथा ग्रह है। सौरमंडल में मौजूद सभी ग्रहों में पृथ्वी के अलावा मात्र मंगल ही ऐसा ग्रह है जहाँ जीवन की संभावना देखी गई है। सौरमंडल में सबसे बड़ा ज्वालामुखी मंगल ग्रह पर है। मंगल के पास पृथ्वी की तरह पोलर कैप्स हैं। इस पोलर कैप्स में ज़्यादातर जमे हुए पानी की जगह जमा हुआ कार्बन डाइऑक्साइड है। मंगल ग्रह का नाम 'मार्स' ग्रीक भाषा से लिया गया है। इसका अर्थ है–युद्ध का देवता। लाल रंग इसकी विशेषता है। इस ग्रह पर पाई जाने वाली मिट्टी में जंग लगे हुए आयरन के कण हैं। जिनसे यह पूरा लाल दिखाई देता है। सूर्य से इसकी औसतन दूरी 136,764,000 मील है। यह सूर्य की परिक्रमा 687 दिनों में पूरी करता है। पहले ही प्रयास में इस अभियान की सफलता से इस क्षेत्र में भारत के लिए बड़ा सकारात्मक वातावरण बना है। भारत की इस सफलता से विदेशों में उसका मान-सम्मान बढ़ा है। इस सफलता का उपयोग मानव जाति के लिए किया जा सकेगा।

(ख) पश्चिम की ओर बढ़ते कदम

वर्तमान समय में लोगों का पश्चिम की ओर आकर्षण निरंतर बढ़ता जा रहा है। पश्चिमी जगत की चकाचौंध हमें आकर्षित करती है। वहाँ का रहन-सहन, खान-पान, स्वच्छता एवं सुविधाजनक जीवन हमें लुभाता है। पाश्चात्य जगत के प्रति हमारे आकर्षण के पीछे कई कारण निहित हैं। पश्चिमी देश संपन्न हैं। वहाँ के निवासियों को रहन-सहन और कार्य करने की बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध हैं। उन्हें बेहतर वेतन मिलता है। वहाँ काम और कर्मचारी वर्ग को महत्व दिया जाता है। जबकि भारत 70 साल के उपरांत भी सभी को आवास, भोजन, वस्त्र और चिकित्सा जैसी मूलभूत आवश्यकताएँ तक उपलब्ध नहीं करा पाया है। पश्चिमी देशों में समृद्धि है, वे विकसित हैं तथा वहाँ विज्ञान के नवीनतम उपकरण उपलब्ध हैं। भारत के प्रतिभावान डॉक्टर, इंजीनियर, आई॰टी॰ क्षेत्र के विशेषज्ञ वहाँ जाकर बसने की आकांक्षा मन में पाले रहते हैं। यह प्रतिभा पलायन ही तो है। पर इसे रोका भी तो नहीं जा सकता। जब तक हमारा देश उन्हें ये सुविधाएँ नहीं दे पाता, तब तक उनके लिए पश्चिमी देशों का आकर्षण बना रहेगा। केवल उच्च शिक्षित लोगों के ही कदम पश्चिमी देशों की ओर नहीं बढ़ रहे हैं, अपितु छोटे-मोटे कामगार भी वहाँ जाकर काम करना चाहते हैं। वहाँ इनकी आवश्यकता है तथा छोटे कामगारों का सम्मान भी है। वहाँ उन्हें काम के बदले भरपूर वेतन मिलता है। कुछ कुशल व्यवसायियों ने तो पश्चिमी देशों में अपना व्यवसाय भी जमा लिया है। इस पश्चिमी सभ्यता के आकर्षण से बचने के लिए भारत को भी विकास की प्रक्रिया में तेज़ी से आगे बढ़ना होगा। पिछले कुछ वर्षों से भारत निरंतर विकास कर रहा है। ऐसी स्थिति सुखद है, पर अभी इसकी रफ़्तार धीमी है। हम उम्मीद कर सकते हैं कि आगामी एक दशक में विदेशों के प्रति भारतीयों का आकर्षण कम होगा। उन्हें भारत में ही रहकर काम करने में गर्व का अनुभव होगा। ऐसी स्थिति शीघ्र ही आएगी। अब भारत में भी पश्चिमी देशों जैसी सुविधाएँ उपलब्ध होने लगी हैं। अत: उम्मीद की जा सकती है कि प्रतिभा पलायन कुछ हद तक रुक सकेंगी। अब भारत विकसित देश बनने की दिशा में प्रयासरत है, अत: वहाँ का आकर्षण घटेगा।

(ग) महानगरों में असुरक्षित महिलाएँ

समाज का महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण सदैव से पक्षपातपूर्ण रहा है। परंपरागत रूप से महिलाओं को समाज में दोयम दर्ज़े का नागरिक समझा जाता रहा था और उनका काम घर पर रहकर घर-परिवार को सँभालना ही था। पर अब स्थितियाँ बदल रही हैं। महिलाएँ घर से बाहर निकल रही हैं और प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज़ करा रही हैं। विशेषकर नगरों और महानगरों में कामकाज़ी महिलाओं की संख्या बहुत अधिक है। वे काम के सिलसिले में घर से बाहर निकल रही हैं। कार्यालयों में काम करती हैं, शिक्षण-संस्थानों में पढ़ाती हैं और जीविकोपार्जन का हर वह कार्य करती हैं, जो पुरुष करता है। इसके बावजूद अधिकतर पुरुषों का दृष्टिकोण महिलाओं के प्रति अब भी दकियानूसी ही है। उनकी विकृत मानसिकता के कारण घर से बाहर निकलने वाली महिलाएँ प्राय: स्वयं को असुरक्षित महसूस करती हैं और आशंकित रहती हैं। उनकी आशंका निर्मूल भी नहीं है। आमतौर पर महानगरों में महिलाओं के प्रति अत्याचार और अनाचार की घटनाएँ सुनने को मिलती हैं। बहुत-सी ऐसी घटनाएँ भी होती हैं, जो देश-दुनिया में अखबारों की सुर्खियाँ बनती हैं और जिनके कारण पूरे देश की बदनामी होती है। कड़े दंड का भय और सामाजिक कलंक के दाग से बेपरवाह ऐसे अपराधियों के हौसले बुलंद रहने के बहुत-से कारण हैं। एक कारण तो समाज के अंदर व्याप्त यह अस्वस्थ मानसिकता है कि महिलाओं के प्रति होने वाले अपराध में प्राय: कहीं-न-कहीं दोष महिलाओं का भी होता है। साथ ही, पुलिस और प्रशासन का महिलाओं के प्रति असंवेदनशील दृष्टिकोण भी ऐसे अपराधों को प्रोत्साहित करता है। कुछ ऐसे 'भले' लोग भी होते हैं जो इनका पुरज़ोर विरोध तो करते हैं, परंतु उनका विरोध केवल शाब्दिक होता है। यदि उनके सामने कहीं किसी महिला के साथ अन्याय या कुछ गलत हो रहा हो तो उस समय वे उसे नज़रअंदाज़ करने में ही अपनी भलाई समझते हैं। इस मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है। हमें सजग रहकर इस समस्या के निराकरण के लिए सक्रिय भूमिका निभानी होगी। यदि कहीं कोई ऐसी घटना दिखाई दे तो उसका सक्रिय विरोध करना होगा। सुरक्षा व्यवस्था की कमियों को दूर करने में मदद करनी होगी। पुलिस तथा अन्य संबंधित विभागों को भी अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहना होगा। तभी इस समस्या का समाधान संभव है।

8. ग्रीन अपार्टमेंट पश्चिम विहार

नई दिल्ली

07 मई, 20XX

संपादक

हिंदुस्तान

नई दिल्ली

विषय : समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के संबंध में

महोदय

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार की विकट समस्या के प्रति अपनी चिंता व्यक्त करना चाहता हूँ। आज समाज में पैसों की भूख बढ़ती जा रही है। उसका मूल कारण है—जीवन की बढ़ती हुई माँगें। आज चारों ओर लूट-खसोट, झूठ-फ़रेब और पाखंड का बोलबाला है। भ्रष्टाचार समाज में अपनी गहरी पैठ बना चुका है। उसे हटाने या समाज से निकालने का उपाय संभव नहीं है। व्यवस्था का यह हाल है कि ऊपर से लेकर नीचे तक सभी भ्रष्ट हैं, ऐसे में कौन किसे रोकेगा या ठीक करने का प्रयत्न करेगा यह पता नहीं।

सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक, सरकारी व गैर-सरकारी कोई भी क्षेत्र इस रोग से मुक्त नहीं है। देश के कर्ता-धर्ता कहे जाने वाले नेता भ्रष्टाचार के सबसे बड़े उदाहरण बने हुए हैं। इन नेताओं ने अपने स्वार्थ के लिए पुलिस व नौकरशाही को भी अपने दुराचारों में शामिल कर लिया है। सरकारी कार्यालयों में घूस के बिना फ़ाइल आगे नहीं बढ़ती। हर आदमी उस कमाई की उम्मीद में बैठा है जिसके लिए उसने कोई मेहनत नहीं की है। आज उस व्यक्ति को सभी सलाम कर रहे हैं जो सबसे अधिक भ्रष्ट है। सच्चाई और दृढ़ता के साथ जीवन जीने वालों को कमज़ोर और डरपोक माना जा रहा है। यह स्थिति समाज के लिए बहुत घातक बन गई है।

समय की माँग है कि युवा पीढ़ी आगे आए और दृढ़-संकल्प के साथ समाज में नए मूल्यों की स्थापना करे। आज आवश्यकता है ऐसे लोगों की, जो देश के प्रति समर्पण का भाव रखते हों। वर्तमान व्यवस्था में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। देश की युवा पीढ़ी में त्याग-बलिदान का अलख जगाने की ज़रूरत है। मेरा आपसे अनुरोध है कि भ्रष्टाचार विरोधी इस अभियान में इस पत्र को अपने समाचार-पत्र में स्थान देने की कृपा करें ताकि लोगों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हो और वे इसे सुधारने के लिए योजनाबद्ध कदम उठाएँ।

सधन्यवाद

भवदीय

क॰ख॰ग॰

अथवा

क॰ख॰ग॰ विद्यालय

देहरादून, उत्तराखंड

10 सितंबर, 20XX

प्रिय मित्र सोमेश

सप्रेम नमस्ते

आशा है तुम सकुशल होगे। तुमने मेरे जन्मदिन पर जो शुभकामना संदेश एवं उपहार भेजा है, उसके प्रति मैं तुम्हारा आभार व्यक्त करता हूँ। यह उपहार मेरे प्रति तुम्हारे स्नेह का परिचायक है। उपहार के रूप में तुमने जो सुंदर घड़ी भेजी है, वह मेरे सभी परिजनों को पसंद आई है। यह उपहार मुझे समय का पाबंद बनाएगा। मुझे घड़ी की आवश्यकता भी बहुत थी। इस अमूल्य भेंट को मैं सदैव सँभालकर रखूँगा।

अपनी माता जी को मेरा सादर प्रणाम कहना।

तुम्हारा प्रिय मित्र
उमेश

9.

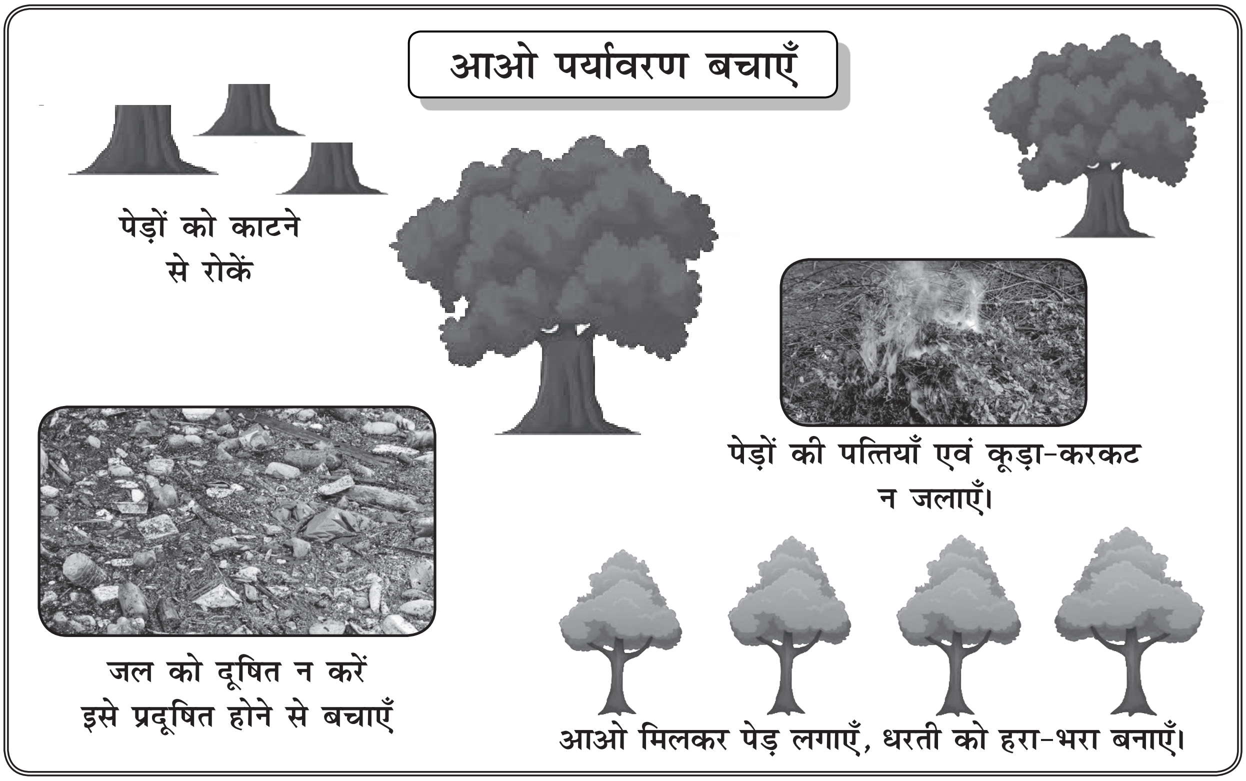

अथवा

अपने बच्चों का भविष्य सुरक्षित बनाएँ
उन्हें उपहार में दें– एकदम नई पॉलिसी

बच्चों के सपने साकार करें उच्च शिक्षा विदेश में अध्ययन स्वरोजगार

तरुण अभिलाषा

कम प्रीमियम अधिक लाभ
आकर्षक बोनस

इस माह पॉलिसी लेने पर प्रीमियम में पाएँ 2% की विशेष छूट

परिपक्वता अवधि के बाद लाखों में भुगतान पाएँ

हमसे आज ही मिलें
011–274................

10.

संदेश

प्रातः 7.00 बजे

14 सितंबर, 20XX

सुमित

हमारी एकता और अखंडता ही हमारे देश की पहचान है। हम हैं हिंदुस्तानी और हिंदी हमारी ज़बान है। हिंदी हमारी आन-बान-शान है। हमें अपनी भाषा पर अभिमान है। 'हिंदी दिवस' पर मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। जय हिंद, जय हिंदी।

अखिल गुप्ता

अथवा

संदेश

अपराह्न 3.00 बजे

15 अप्रैल, 20XX

सुशांत

साहिल से तुम्हारी उपलब्धि के विषय में पता चला। राष्ट्रीय तीरंदाज़ी प्रतियोगिता में तुम्हें रजत पदक मिला। इस कामयाबी से तुमने अपने परिवार, समाज और देश का नाम रोशन कर दिया। इसी तरह मेहनत करके अगले वर्ष स्वर्ण पदक हासिल करना। मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

राजीव मित्तल

अभ्यास प्रश्न-पत्र–2

1. गद्यांश–I

(क) iv	(ख) ii	(ग) iii	(घ) i	(ङ) iii

गद्यांश–II

(क) iii	(ख) iii	(ग) iv	(घ) i	(ङ) iv

2. पद्यांश–I

(क) iv	(ख) iii	(ग) iii	(घ) i	(ङ) i

पद्यांश–II

(क) iii	(ख) iv	(ग) i	(घ) iii	(ङ) ii

3.	(क) ii	(ख) i	(ग) iii	(घ) i	(ङ) i
4.	(क) ii	(ख) iii	(ग) i	(घ) iii	(ङ) i
5.	(क) iii	(ख) i	(ग) i	(घ) ii	(ङ) iii
6.	(क) ii	(ख) i	(ग)	(घ) iii	(ङ) ii

7. (क) राष्ट्र-निर्माण में नारी का योगदान

राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत नारियों के बलिदान की गौरव–गाथाएँ प्रत्येक देश के इतिहास को गौरवान्वित करती हैं। भारतीय नारियों ने भी राष्ट्रीय विकास और गौरव की श्री–वृद्धि करने में सदैव पुरुषों का साथ निभाया है। कई क्षेत्रों में तो वे पुरुषों से आगे निकल गई हैं। ममता, त्याग, पवित्रता, उदारता और सहनशीलता आदि गुणों से संपन्न भारतीय नारी को गृहलक्ष्मी का दर्ज़ा दिया जाता है। भारतीय संस्कृति में नारियों को बहुत सम्मान दिया गया है। परिवार और समाज में उनका महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय नारियाँ आज भी भारतीय संस्कृति को जीवित रखे हुए हैं। मध्य युग में विदेशी हमलावरों और अंग्रेजी शासकों के समय में भारतीय नारियाँ अपने परंपरागत स्थान पर नहीं रह सकीं। तत्कालीन परिस्थितियों ने उन्हें परदे के पीछे चले जाने पर विवश कर दिया। समाज में अशिक्षा, अंधविश्वास, बहु–विवाह, पर्दा–प्रथा और दहेज जैसी कुप्रथाओं के कारण नारी का उज्ज्वल स्वरूप विखंडित हो गया। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन नारी–स्वतंत्रता के लिए वरदान बनकर आया। परिणामस्वरूप समाज में जागृति आई। नारी शिक्षा के प्रति चेतना उत्पन्न हुई और नारी परदे को त्याग कर, घर की चारदीवारी को लाँघकर स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़ी। पुरुषों के साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर उसने संघर्ष किया। जेल गई, लाठियाँ खाईं और अंत में स्वाधीनता की पहली किरण नारियों के जीवन में उन्नति और गरिमा का संदेश लेकर आई। वर्तमान युग नारी–स्वतंत्रता का युग है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के साथ ही नारी में आत्मविश्वास बढ़ा है। इसी आत्मविश्वास एवं जाग्रति का परिणाम है कि नारी प्रत्येक क्षेत्र में; चाहे वह वैज्ञानिक क्षेत्र हो या राजनैतिक अथवा प्रशासनिक क्षेत्र हो; उसी योग्यता और दक्षता से कार्य कर रही है, जिस योग्यता से पुरुष करते हैं। आज नारी राष्ट्र के निर्माण कार्य में पूर्ण सहयोग दे रही है। एक ओर घर में वह अपने बच्चों को राष्ट्र का अच्छा नागरिक बनाने के लिए उन्हें प्रेरणा और मार्गदर्शन दे रही है तो दूसरी ओर वह राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक समस्याओं के समाधान में भी हाथ बँटा रही है। प्रशासनिक क्षेत्रों में वह प्रधानमंत्री तक के दायित्व को सफलतापूर्वक निभा चुकी है और देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटी। आज शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासन, व्यापार, नृत्य-संगीत, पर्वतारोहण, खेलकूद, मनोरंजन, राजनीति, न्यायालय, विश्वविद्यालय–ऐसा कौन–सा स्थान या क्षेत्र है, जहाँ नारियों का योगदान नहीं है। सत्य तो यह है कि राष्ट्रनिर्माण के सभी क्षेत्रों में महिलाएँ सक्रिय हैं।

(ख) मेक इन इंडिया

'मेक इन इंडिया' भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित एक कार्यक्रम है, जिसके अंतर्गत भारत में अपने उत्पादों का निर्माण करने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों और घरेलू कंपनियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। दरअसल इसका अर्थ है कि अच्छी और ज़रूरत की चीज़ों का ज़्यादा-से-ज़्यादा निर्माण भारत में होगा। इस योजना के तहत माननीय प्रधानमंत्री चाहते हैं कि इन ज़रूरी चीज़ों के पैकेट या यूँ कहें कि इन वस्तुओं पर 'मेड इन इंडिया' लिखा हो। यह शब्द किसी भी चीज़ या वस्तु पर तभी अंकित किया जा सकता है जब उसका निर्माण भारत में हुआ हो। इसका आरंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 25 सितंबर 2014 को किया था। इस योजना का लक्ष्य भारत में रोज़गार और कौशल को बढ़ाना है। अर्थव्यवस्था की दृष्टि से इसे 25 क्षेत्रों में लागू किया गया है, जिनमें से कुछ हैं—ऑटोमोबाइल, रसायन, आईटी, फ़ार्मा, वस्त्र, बंदरगाह, विमानन, चमड़ा, पर्यटन और आतिथ्य एवं कल्याण, रेलवे, डिज़ाइन, विनिर्माण, अक्षय ऊर्जा, खनन, जैव प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स। इस योजना के अहम फ़ायदे ये हैं कि इससे एक तो देश में बनी वस्तु की कीमत कम होगी। इसके अलावा अगर वस्तु का निर्माण भारत में ही होगा, तो उसका निर्यात करके राजकीय खज़ाने को भी भरा जा सकता है। यह कार्यक्रम एक रचनात्मक पहल है, जो भारत के उज्ज्वल औद्योगिक भविष्य के लिए मील का पत्थर साबित होगा।

(ग) भारत में प्रजातंत्र के लाभ

एक अच्छे राष्ट्र की चर्चा करते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा था—मेरे विचार में राष्ट्र का सबसे बड़ा पाप है जनता की अवहेलना। हमारे पतन का भी कारण यही है। कितनी भी राजनैतिक दौड़-धूप व्यर्थ सिद्ध होगी, जब तक देश की साधारण जनता शिक्षित नहीं होती, उन्हें आवश्यक भोजन एवं आवश्यक सुविधाएँ नहीं मिलती। वे हमारी शिक्षा का व्यय तथा भार उठाते हैं, हमारे देवालयों का निर्माण करते हैं और इसके बदले उन्हें क्या मिलता है, ठोकरें। हमने उन्हें अपना दास बना लिया है। यदि हमें भारत का पुनर्निर्माण करना है, तो इसके लिए भरसक प्रयत्न करना होगा। यह कथन प्रजातांत्रिक मूल्यों वाले देश के लिए सत्य है। भारत में 26 जनवरी, 1950 को गणतंत्र की स्थापना हुई और प्रजातांत्रिक सरकार बनी। जनता के लिए जनता के द्वारा बनी सरकार को प्रजातंत्रीय सरकार कहा जाता है, जिसकी सर्वोच्च सत्ता जनता के ही हाथों में होती है। इस सत्ता से हमारा अभिप्राय है कि जनता को यह अधिकार हो जाता है कि वह लोक प्रशासन की स्थापना के लिए उस शासक वर्ग को पदच्युत कर सकती है, जो उसके कल्याण कार्यों पर ध्यान नहीं देता। अत: प्रजातंत्र में सरकारी कार्य व शासन का कार्यभार प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधि ही सँभालते हैं। प्राचीनकाल में प्रजातंत्र के स्थान पर राजतंत्र था। इसमें राजा का ही मुख्य रूप से शासन होता था। राजा की मृत्यु के पश्चात उसका बड़ा लड़का या लड़की ही राजा और रानी बनते थे। आगे चलकर कतिपय शासन प्रणालियाँ जनता के समक्ष आईं, तो यह राजतंत्र शनै:-शनै: समाप्त हो गया और संसार के कई देशों में प्रजातंत्र का आरंभ हुआ। 26 जनवरी, 1950 में हमारे देश में लोकतंत्र पर आधारित गणराज्य की स्थापना हुई। भारत का प्रजातंत्र लोकतांत्रिक प्रजातंत्र है। जनता के प्रतिनिधि राष्ट्र की नीतियों का नियमन, संचालन तथा नियंत्रण करते हैं। प्रजातंत्र प्रणाली में अनेक लाभदायक गुण विद्यमान हैं। इसमें राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। आर्थिक समता का अवसर प्राप्त होता है। हम अपना कलात्मक व विचारात्मक, सभी प्रकार का विकास कर सकते हैं। किसी नेता के अनुकूल न होने पर हम दूसरे नेता का चयन कर सकते हैं। इस प्रकार राजनैतिक नेताओं पर प्रजा का नियंत्रण सर्वथा बना रहता है। प्रजातंत्रीय शासन में कभी-कभी कुछ नागरिक अपने को इतना अधिक स्वतंत्र समझने लगते हैं कि वे सरकार की किसी भी आज्ञा को नहीं मानना चाहते। उन्हें लगता है कि उनको इस सरकार में मनमानी करने का अवसर मिल गया है। ऐसे व्यक्ति प्रजातांत्रिक व्यवस्था के कलंक होते हैं। आवश्यक तो यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों और उत्तरदायित्वों को समझे, तभी प्रजातांत्रिक व्यवस्था का पूरा लाभ देश और समाज को मिल सकेगा।

8. रोड नं॰ 58 पंजाबी बाग
दिल्ली

24 नवंबर, 20XX

प्रभाग अधीक्षक
उत्तर रेलवे, नई दिल्ली

विषय : <u>रेलवे कर्मचारी के अशिष्ट व्यवहार के संबंध में</u>

मान्यवर
निवेदन है कि गत 22 नवंबर को मैं नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से चलने वाली देहरादून एक्सप्रेस से खतौली जा रहा था। मुझे बड़े खेद के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि मार्ग में एक रेलवे कर्मचारी ने मेरे साथ अत्यंत अशिष्ट व्यवहार किया। उस कर्मचारी का नाम क॰ख॰ग॰ है और उसका नंबर–टी॰टी॰आई॰......है। पूरी घटना इस प्रकार है–मैं 22 नवंबर को सुबह नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से देहरादून एक्सप्रेस में चढ़ा। मेरे साथ मेरे दो भाई भी थे। मैंने अपना और अपने एक भाई का टिकट लिया हुआ था। चूँकि मेरा छोटा भाई अभी तीन वर्ष का नहीं था, इसलिए मैंने उसका टिकट नहीं लिया था।

गाड़ी जब आगे बढ़ी तब उक्त टिकट निरीक्षक ने प्रवेश किया। मुझसे जब टिकट माँगे गए तब मैंने सब टिकट दिखा दिए। उसने जब मेरे छोटे भाई का टिकट माँगा तब मैंने बता दिया कि वह अभी तीन साल का ही नहीं हुआ है। इस पर उसने मुझे झूठा बताकर डिब्बे में बैठे सभी यात्रियों के सामने अपमानित किया। इतने पर भी मैं उसका आधा टिकट लेने को तैयार हो गया लेकिन वह तो मुझसे जुर्माने की रकम तथा टिकट के पैसे वसूलना चाह रहा था। जब मैंने इनकार किया तब उसने मुझे जेल भेजने की धमकी भी दी। इस पत्र के साथ मैं आपको प्रमाण के लिए अपने भाई का जन्म प्रमाण-पत्र भेज रहा हूँ। आप कृपया करके उससे इस बात का स्पष्टीकरण माँगें कि उसने ऐसा अभद्र व्यवहार क्यों किया?

मेरा आपसे अनुरोध है कि कृपया मेरे इस पत्र पर गौर करें तथा मुझे सूचित करने का कष्ट करें कि आपने इस संदर्भ में क्या कदम उठाए हैं?

धन्यवाद सहित

भवदीय

क॰ख॰ग॰

अथवा

क॰ख॰ग॰ स्कूल

रोहिणी, नई दिल्ली

08 अप्रैल, 20XX

प्रिय तुषार

सप्रेम नमस्ते

अभी-अभी तुम्हारा पत्र मिला है। जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि अब तुम्हारा स्वास्थ्य पहले से बहुत अच्छा है। मेरी ईश्वर से कामना है कि जीवन में लगातार उन्नति करते हुए आगे बढ़ते रहो।

तुमने मेरे विद्यालय के विषय में पूछा है। मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि मेरा नया विद्यालय अन्य विद्यालयों की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छा है। यहाँ प्रवेश पाने के लिए विशेष प्रक्रिया से गुज़रना पड़ता है। यहाँ का वार्षिक परीक्षाफल, सुंदर तथा प्रदूषण रहित वातावरण, सुयोग्य एवं परिश्रमी अध्यापक तथा मेधावी छात्र इस विद्यालय की अनमोल पूँजी हैं। जहाँ एक ओर इसका वार्षिक परीक्षा परिणाम हर वर्ष लगभग 100 प्रतिशत आता है, वहीं खेलों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा अन्य गतिविधियों में भी इस विद्यालय ने धाक जमा रखी है।

इस विद्यालय का लाल ईंटों से बना भवन अत्यंत सुंदर व आकर्षक है। लगभग 125 से भी अधिक कमरे आधुनिक मेजों एवं अन्य आवश्यक सामग्री से सुसज्जित हैं। चारों ओर छायादार वृक्ष तथा फूलों के सुंदर बगीचे हैं। यहाँ का सुंदर पुस्तकालय, प्रयोगशाला कक्ष, क्रीड़ाकक्ष इसकी शोभा में चार चाँद लगाते हैं। इस विद्यालय में लगभग 2000 छात्र हैं, जो आज्ञाकारी, मेधावी, परिश्रमी एवं सभ्य हैं।

यहाँ छात्रावास का माहौल भी अच्छा है। छात्रावास के अधीक्षक अनुशासन के मामले में कठोर परंतु अत्यंत मृदुल स्वभाव के हैं। दोपहर तथा रात का भोजन पौष्टिक एवं स्वादिष्ट होता है। मुझे आशा है इस वर्ष मैं प्रथम श्रेणी प्राप्त कर लूँगा। शेष मिलने पर।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
रमेश जैन

9.

स्वाद की दुनिया में एक नया नाम!

लाजवाब स्वाद

स्वाद जो यादों में बस जाए

अनुराधा मिष्ठान्न भंडार की शुद्ध, ताजी मिठाइयाँ

शादी विवाह के लिए बुकिंग की व्यवस्था।

- ✔ शुद्ध परिवेश में तैयार
- ✔ कुशल कारीगरों द्वारा तैयार
- ✔ बाज़ार से कम दाम की गारंटी

मिठाई के साथ डिब्बे का वजन नहीं तोला जाता है

खुद खाएँ और दूसरों को भी खिलाएँ।

संपर्क करें– 011-2763...

अथवा

क्या आप बालों की समस्या से परेशान हैं?

क्या अपको अनिद्रा और सिर दर्द की समस्या है?

यदि हाँ, तो चिंता छोड़िए।

केशिका हर्बल तेल

आपकी बालों की हर समस्या का समाधान

- प्राकृतिक गुणों से भरपूर
- भीनी-भीनी सुगंध वाली।
- छोटी-बड़ी शीशियों में उपलब्ध

हानिकारक रसायनों से बचें और बचाएँ

MRP पर 10% की छूट

निर्माता : उपकार ग्रामोद्योग प्रा०लि०

10.

संदेश

प्रातः 7.00 बजे

10-06-20XX

मामी जी

नई सुबह .... खुशियों का घेरा, सूरज की किरणें, चिड़ियों का बसेरा, ऊपर से आपका ये खिलता हुआ चेहरा, मुबारक हो आपको ये सुहाना सवेरा।

सुप्रभात

नीलेश

अथवा

संदेश

अपराह्न 3.30 बजे

10-06-20XX

पंकज

रंग-बिरंगे रंगों और भाईचारे से भरपूर खुशियों और उल्लास का त्योहार होली तुम्हारे जीवन में उत्साह और उमंग का संचार कर दे।

परिवार के सभी लोगों को होली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

दीपक कात्याल